चकमक

सितम्बर, 1997 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 7.00

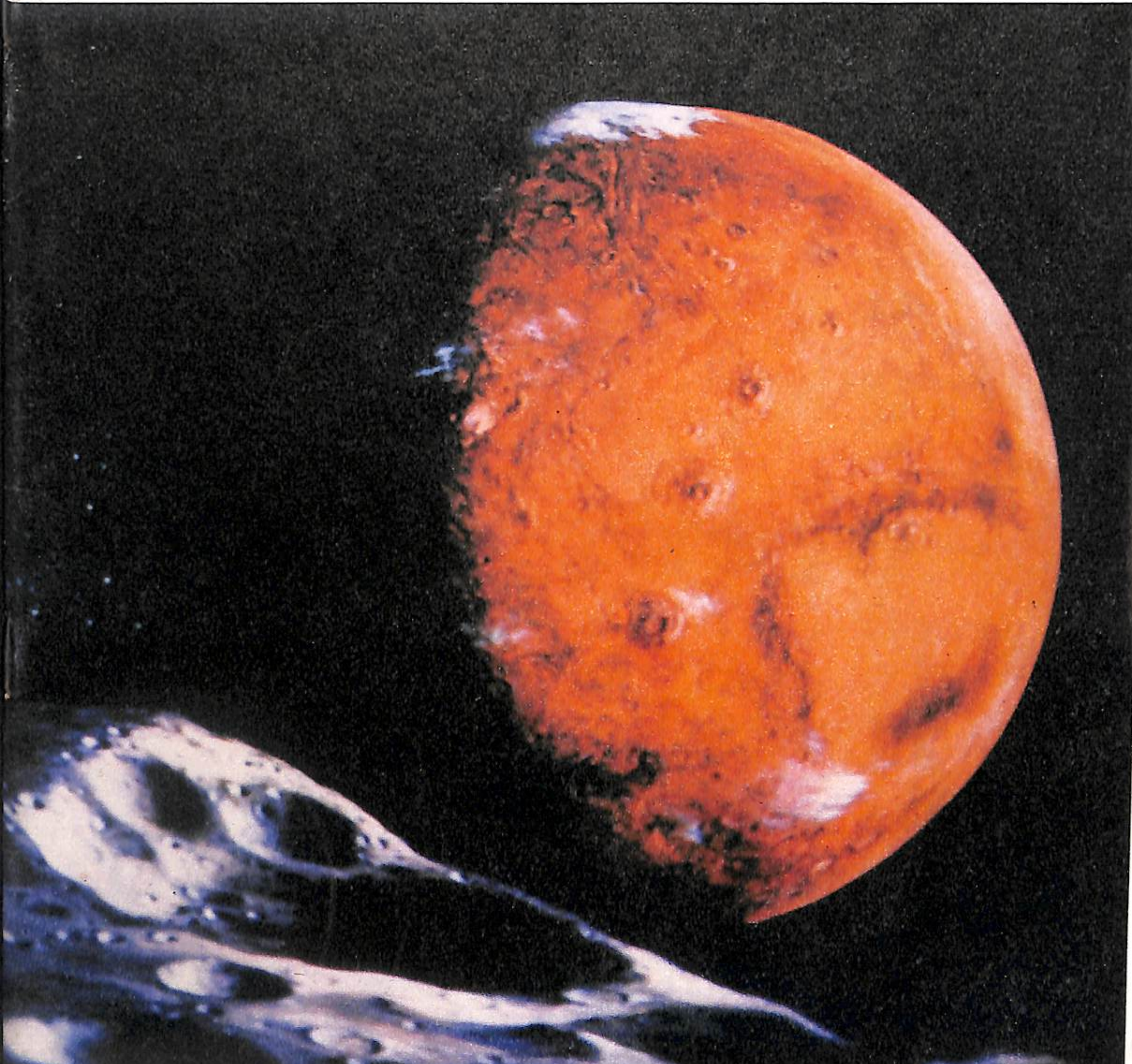

मंगल का रास्ता

देवयानी पाण्डे, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

चिन्ना फिलोमिना, सात वर्ष, भोपाल, म.प्र.

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-13 अंक-3 सितम्बर, 1997
सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी
वितरण
कमल सिंह, मनोज निगम, अशोक रोकड़े

चकमक का चंदा
एक प्रति : सात रुपए
छमाही : 40.00 रुपए
वार्षिक : 75.00 रुपए
दो साल : 140.00 रुपए
तीन साल : 200.00 रुपए
आजीवन : 750.00 रुपए
साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की मुफ़्त सदस्यता।
आजीवन : 1000.00 रुपए साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50% छूट।
सभी में डाक खर्च हमारा
चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ़्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई -1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016
(म.प्र.)
फोन : 563380

मिताली त्रिवेदी, दूसरी, मन्दसौर, म. प्र.

145 वें अंक में ....

विशेष
5 ❑ मिला, मंगल का रास्ता
कहानी
21 ❑ बुलबुले का एक दिन
कविताएँ
11 ❑ पेड़
34 ❑ नींद
धारावाहिक
38 ❑ क़िस्सा बुरातीनो का -16
हर बार की तरह
2 ❑ इस बार की बात
26 ❑ खेल काग़ज़ का : हवाई जहाज़
35 ❑ वर्ग पहेली
36 ❑ माथा पच्ची
मेरा पन्ना पृष्ठ 12, 13, 19 20, 28 तथा 29 पर
और यह भी
3 ❑ पाठक लिखते हैं
14 ❑ चित्र कथा : बिल्ली के बच्चे
30 ❑ तुम भी बनाओ : कुर्सी
31 ❑ भूकम्प ...और भूकम्प के बाद

आवरण : पृथ्वी के पड़ोसी ग्रह मंगल और उसके एक उपग्रह - डीमोस का एक चित्र। नीचे दिखाई दे रही ऊबड़ - खाबड़ सतह डीमोस की है। चित्रकार हैं - ल्यूडेक पीसेक। चित्र नेशनल ज्योग्राफिक पिक्चर एटलस ऑफ अवर यूनिवर्स से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात .....

जब यह अंक तुम्हारे हाथ में पहुँचेगा, तब तक बरसात की बूँदों की टिपटिप खत्म होने को होगी। साथ ही दाँत किटकिटाने का मौसम शुरू होने वाला होगा।

अब तक स्कूल में पढ़ाई भी तेज़ हो गई होगी। पढ़ाई से याद आया कि हर साल इस महीने की पाँच तारीख़ को 'शिक्षक दिवस' मनाया जाता है। संभवतः तुम्हारे स्कूल में भी मनाया गया होगा। यह तो तुम जानते ही होगे कि हमारे द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन ही शिक्षक दिवस के रूप में याद किया जाता है। राधाकृष्णन स्वयं एक शिक्षक थे।

चकमक में काम करने वाले हम लोग जब कभी अपने बचपन की बातें याद करते हैं, तो उसमें स्कूल के दिन, वहाँ के साथी, वहाँ के शिक्षक भी याद आते हैं। फिर चर्चा चल निकलती है कि कौन से मास्साब या बहनजी का पढ़ाने का तरीका अच्छा लगता था या कि किनसे डर लगता था। या फिर यह कि उनकी सिखाई-बताई कौन-सी बात अब तक याद है। ऐसी ही तमाम बातें।

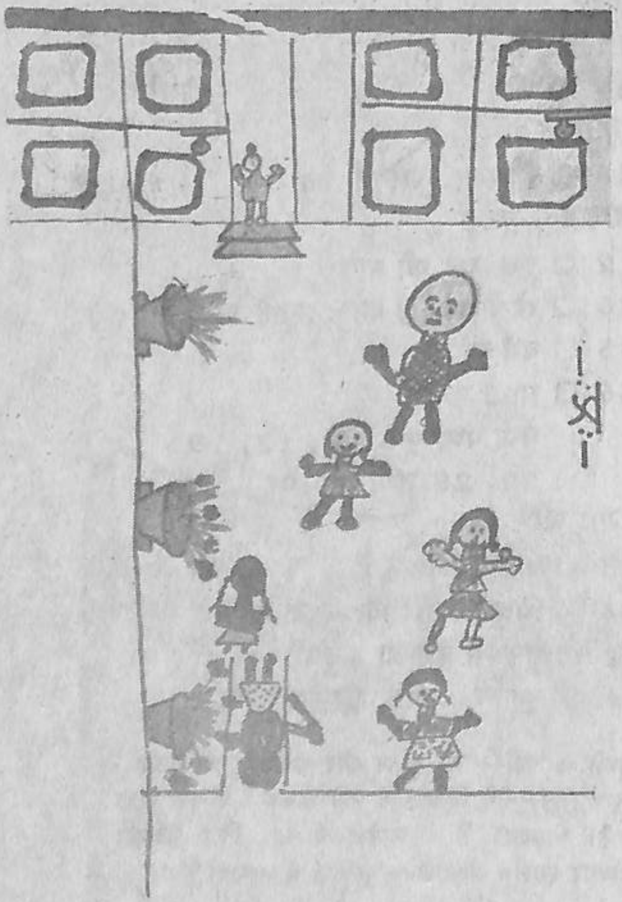

निश्चित ही तुम लोग भी आपस में कभी-कभी इस तरह की बातचीत करते होगे। क्या तुम हमें नहीं बताओगे कि तुम्हें अपने शिक्षकों की कौन-सी बातें अच्छी लगती हैं या .... अच्छी नहीं लगती हैं।

एक और बात। असल में स्कूल में हम जो पढ़ते हैं, सीखते हैं, वह हमारी पढ़ाई का एक हिस्सा है। हम स्कूल के बाहर की ज़िन्दगी में (स्कूल में पढ़ते हुए भी और स्कूल छोड़ने के बाद भी) बहुत कुछ सीख़ते हैं। कुछ अपने आप, कुछ औरों से। जिनसे सीखते हैं, ज़रूरी नहीं कि वे शिक्षक ही हों। क्या तुमने भी ऐसा कुछ अनुभव किया है? अगर हो तो हमें भी बताओ।

❑ चकमक

 ħ मनु पाण्डे, अल्मोड़ा, उ. प्र.

पाठक लिखते हैं

जून अंक में 'शीशे की आलमारी' यद्यपि अनूदित कहानी है, पर अच्छी लगी। कहानी का अन्त स्थूल अधिक हो गया है, थोड़ा सांकेतिक ही रहता। हिन्दी की मौलिक कहानियों को भी दिया जाना चाहिए। शायद आपको अपने उद्देश्य के अनुकूल कहानियाँ कम मिलती हैं।

❑ **डॉ. श्रीप्रसाद, वाराणसी, उ.प्र.**

(आपका कहना सही है। हम चकमक में हिन्दी की मौलिक कहानियाँ छापना चाहते हैं, लेकिन ऐसी कहानियाँ जो चकमक की कसौटियों पर खरी उतरें, कम ही मिलती हैं। आपकी इस टिप्पणी के बहाने लेखकों से अनुरोध है कि वे अपनी कहानियाँ चकमक के लिए भेजें। ❑ **चकमक)**

चकमक बराबर आ रही है। जिस दिन आती है, सबके लिए वह नया दिन होता है। पिछले कुछ महीनों से मैंने महसूस किया है कि उसमें बच्चों की अभिव्यक्ति के लिए तो बहुत कुछ है, पर सीखने के लिए कम है। क्योंकि वयस्क पाठक वर्ग होने के बावजूद यह पत्रिका मूलतः बच्चों की ही है। जिन्हें सीखने के दौर से भी गुज़रना है। हाँ, आपका सिखाने का तरीक़ा परम्परागत तरीक़ों (उपदेशात्मक या तानाशाही) से हटकर है जो वास्तव में उचित है। इसलिए चकमक में ऐसी सामग्री बढ़ाई जाए जो रोचक होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी हो।

वर्ग पहेली व माथापच्ची जैसे ही कुछ और भी स्तम्भ हों जो सामान्य ज्ञान, विज्ञान, देश-विदेश, इतिहास, भूगोल से सम्बंधित हों। बाल समस्याओं का समाधान करते हों। हिन्दी भाषा का ज्ञान बढ़ाते हों, शब्द ज्ञान बढ़ाते हों।

मेरे विचार से यह सब चकमक को ज़्यादा रोचक तो बनाएगा ही, बाल पाठकों के लिए भी उपयोगी होगा। आज पाठ्यक्रम इतना उबाऊ व सतही है, पर उसे पढ़ाने वालों का व्यवहार उससे भी कहीं ज़्यादा उबाऊ है। ऐसे में चकमक जैसी स्तरीय व विशिष्ट पत्रिका का कर्मक्षेत्र कुछ और विस्तृत हो सकता है। पत्रिका में ज़्यादा सामग्री होगी, रोचक व उपयोगी सामग्री होगी तो मूल्य वृद्धि की ओर भी पाठकों का ध्यान नहीं जाएगा।

आपकी समस्याओं को हम समझ सकते हैं। फिर भी आपसे बहुत सारी अपेक्षाएँ हैं।

❑ **गिरिजा कुलश्रेष्ठ, ग्वालियर, म.प्र.**

यहाँ से काटें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक

भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

सदस्यता शुल्क रु. ....

.... माह/वर्ष

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दर

छह माह :	40.00 रुपए
एक साल :	75.00 रुपए
दो साल :	140.00 रुपए
तीन साल :	200.00 रुपए
आजीवन :	750.00 रुपए *
आजीवन :	1000.00 रुपए ∘

* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

∘ इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म.प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

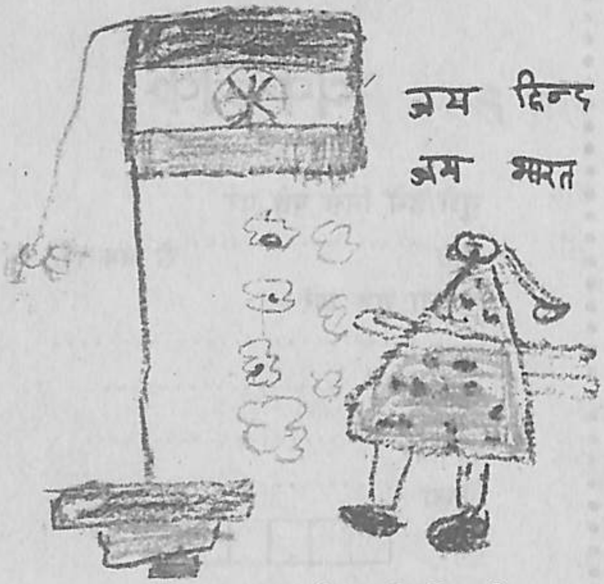

वन्दना वर्मा, पहली, भिलाई, म. प्र.

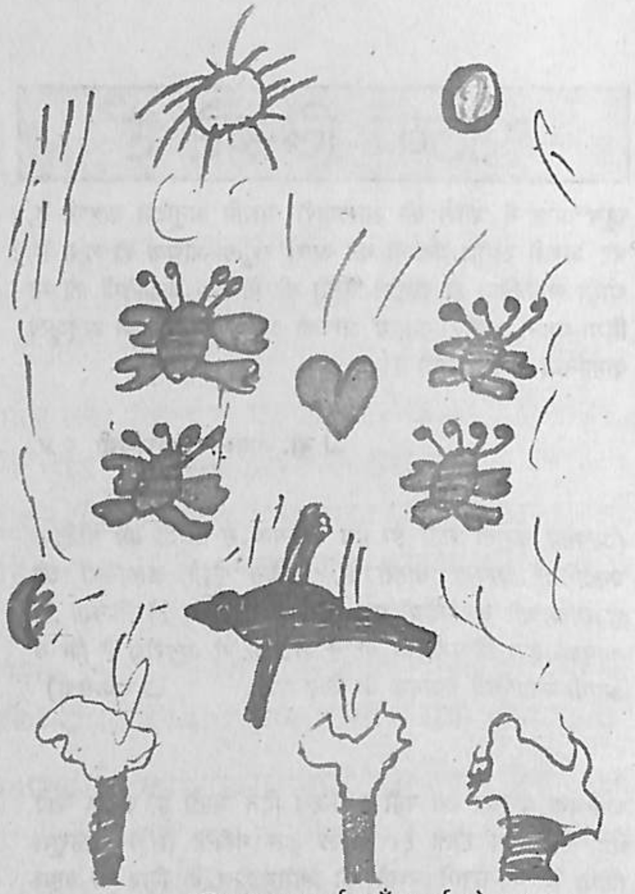

रजत शर्मा, पाँच वर्ष, देवास, म. प्र.

स्वर्णा शर्मा, छठवीं, खरोरा, रायपुर, म. प्र.

अलका, पाँचवीं, अगेरा, देवास, म. प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन □□□□□□

....

....

मिला, मंगल का रास्ता

❑ लाल बहादुर ओझा

इन दिनों मंगल ग्रह की ख़ूब चर्चा है। 4 जुलाई 97 को एक अमेरिकी अंतरिक्ष यान मंगल की सतह पर सफलतापूर्वक उतरा। साथ ही उसकी सतह पर पहली बार कोई मानव निर्मित वस्तु घूम सकी है। घूमने वाली यह वस्तु कोई साधारण नहीं बल्कि एक विकसित 'रोबोट' है। सोजोर्नर नाम के इस रोबोट ने मंगल के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ भेजी हैं। इन नई जानकारियों ने मंगल के बारे में अब तक की कई अटकलों को झूठा साबित कर दिया है।

4 जुलाई, 1996 को अमेरिका की फ़िल्म नगरी हॉलीवुड में एक फ़िल्म रिलीज़ हुई थी - 'द इंडिपेंडेंस डे'। पिछले साल भर से इस फ़िल्म ने धूम मचा रखी है। भारत के कई हिस्सों में इस अंग्रेज़ी फ़िल्म का हिन्दी संस्करण प्रदर्शित किया गया तो देखने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी। फ़िल्म की कहानी उसी मंगल ग्रह को लेकर थी, जो आजकल चर्चा में है। फ़िल्म में यह कल्पना की गई है कि मंगल पर आबादी है।

इस फ़िल्म के रिलीज़ होने के ठीक एक साल बाद 4 जुलाई, 1997 को अमेरिका की ही एक प्रयोगशाला में कुछ अलग ही नज़ारा था। प्रयोगशाला में जमे वैज्ञानिकों के पसीने छूट रहे थे। कहीं कोई आवाज़ नहीं। एकदम चुप्पी। लेकिन कुछ ही घण्टों बाद, भारतीय समय के मुताबिक रात 10 बजकर 37 मिनट पर, पूरी प्रयोगशाला उल्लास और हर्ष के वातावरण से भर उठी। सभी एक दूसरे को गले लगा रहे थे। बच्चों की तरह किलकारियाँ भर रहे थे। कुछ की आँखों में आँसू छलक पड़े थे। ऐसा लग रहा था। जैसे लम्बे समय से किसी खिलौने की चाह में बैठे नन्हे-मुन्नों को वह खिलौना मिल गया हो।

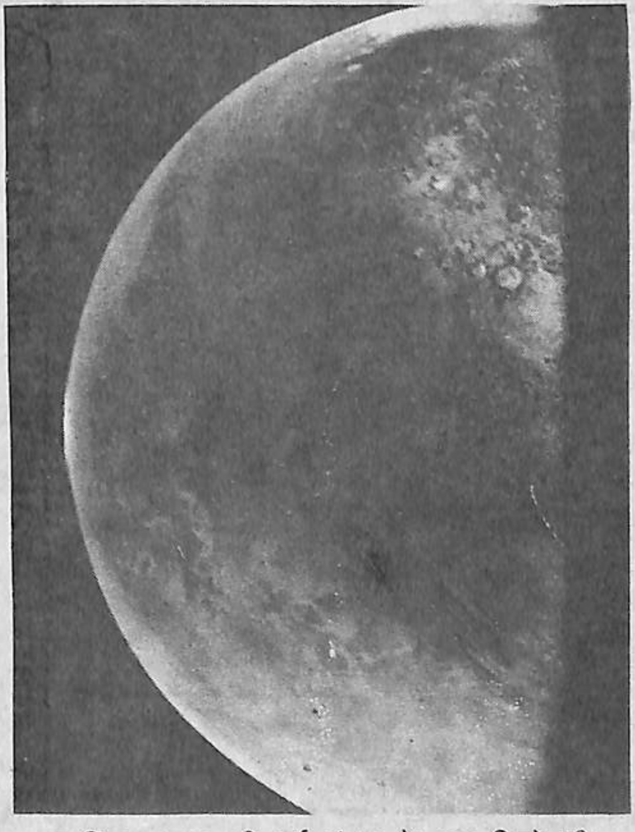

वाइकिंग-1 द्वारा ली गई मंगल के एक हिस्से की तसवीर।

सचमुच, अमेरिका के अंतरिक्ष कार्यक्रमों से जुड़ी संस्था 'नासा' (नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) के वैज्ञानिकों के लिए यह ऐसा ही मौका था। सिर्फ़ उनके लिए ही नहीं, अंतरिक्ष विज्ञान अध्ययन में जुटे विश्व भर के वैज्ञानिकों के लिए भी यह उछल पड़ने की बात थी। ख़ासतौर पर अमेरिका के लिए तो यह दोहरी खुशी मनाने का मौका था। क्योंकि अमेरिका 4 जुलाई को ही अपना स्वतंत्रता दिवस मनाता है। अवसर था 4 दिसम्बर, 1996 को पृथ्वी से छोड़े गए 'पाथफाइंडर' का मंगल की सतह पर सही

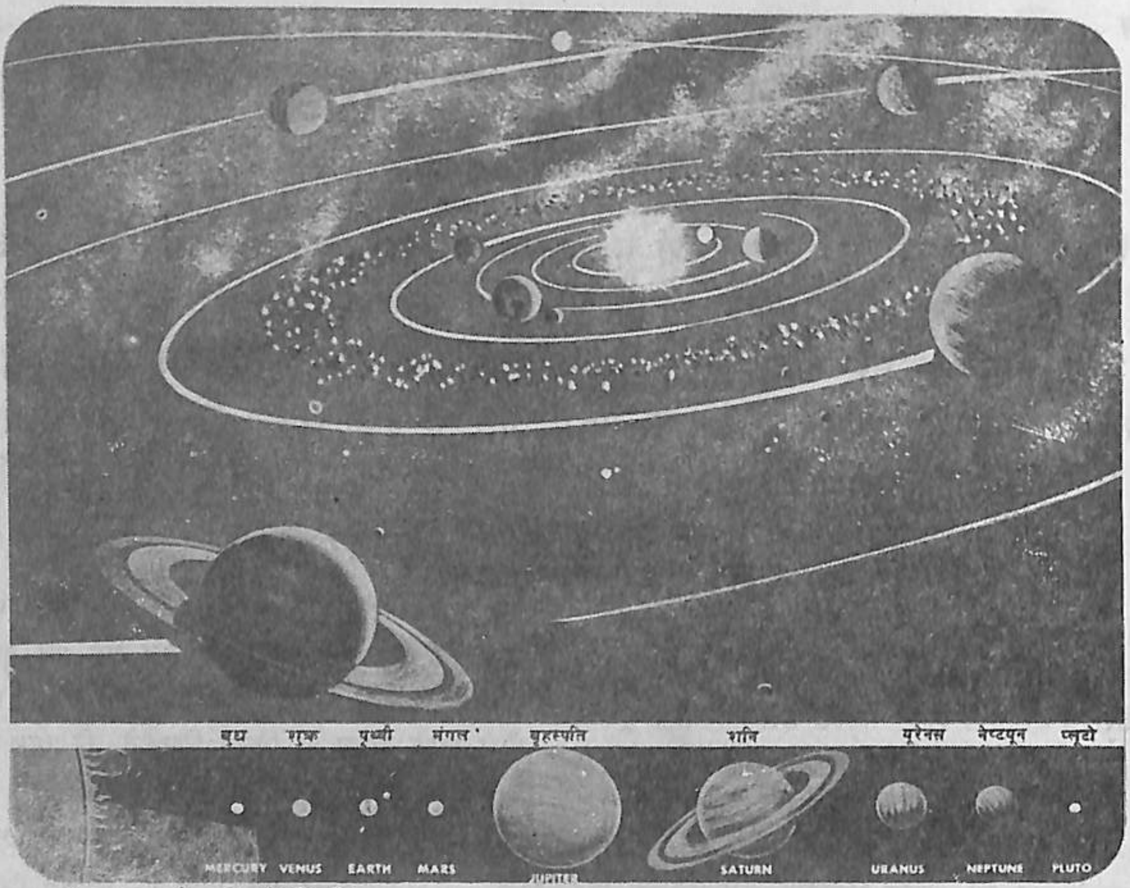

सौरमण्डल में ग्रहों की स्थिति

- पाथ फाइन्डर के मंगल की सतह पर पहुँचने के अन्तिम क्षण

- दो मिनट पहले, सतह से 11 किलोमीटर ऊपर पैराशूट खुला।
- सतह से 61 मीटर ऊपर यानी ठीक 4 सेकेण्ड पहले यान की गति की उल्टी दिशा में रॉकेट छूटा। ताकि सतह से टकराते समय उसकी गति कम हो।
- दो सेकेण्ड पहले पैराशूट गुब्बारे से अलग हुआ।
- और यह मंगल की सतह से गुब्बारा टकराया। इस समय उसकी गति थी 35 किलोमीटर प्रति घण्टा।

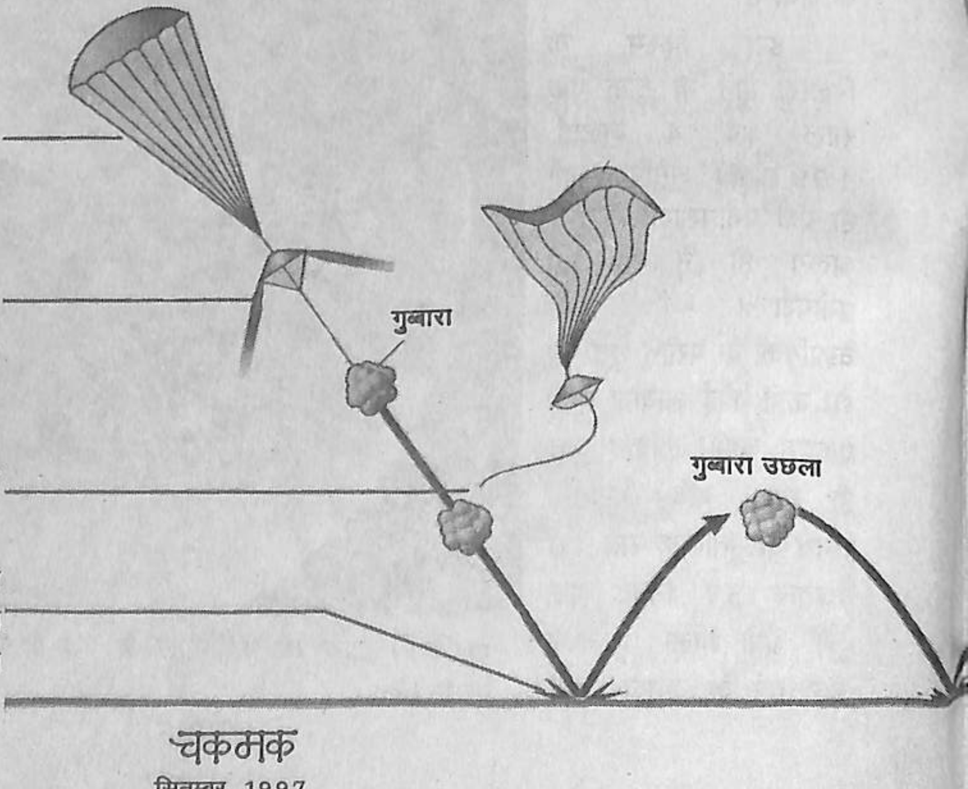

सलामत पहुँचने का।

सदियों से आकाश में अपने लाल प्रकाश से अंतरिक्ष वैज्ञानिकों और आम लोगों को मंगल मोहित करता रहा है। पृथ्वी के इस पड़ोसी ग्रह की सतह पर पहुँचने और उसे ठीक से जानने के ठोस प्रयास में यह एक बड़ी सफलता थी।

यूँ तो मंगल ग्रह तक पहुँचने की कोशिश 1962 में ही शुरू हो गई थी। तब के अभियानों में अंतरिक्ष यान के दो प्रमुख हिस्से होते थे - ऑर्बिटर और लैंडर। ऑर्बिटर एक ख़ास दूरी से मंगल की परिक्रमा करता था, जबकि 'लैंडर' को मंगल की सतह पर उतारने की कोशिश की जाती थी। पिछले अधिकांश अभियानों में ऑर्बिटर सही-सलामत काम करते थे, लेकिन लैंडर का सम्पर्क ऑर्बिटर से टूट जाता था। कभी लैंडर मंगल की सतह के पास पहुँचते ही नष्ट हो जाते थे, या ऐसा ही और कुछ हो जाता जिससे इनका काम पूरा नहीं हो पाता था। पहले के अभियानों में अमेरिकी अंतरिक्ष यान वाइकिंग-1 और वाइकिंग-2 के लैंडर सफलतापूर्वक मंगल की सतह पर उतरे। सतह पर उतरने के बाद इन यानों के लैंडर ने अपनी प्रयोगशाला की मदद से कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ इकट्ठी की। इनसे 50 हज़ार से अधिक तसवीरें मिलीं। वाइकिंग-2 का लैंडर 1982 तक जानकारी भेजता रहा। उसके बाद यह नष्ट हो गया। वाइकिंग अभियान से मिली जानकारी ही ताज़ा अभियान का आधार बनी (देखो चार्ट)।

पाथफाइंडर अभियान पहले के अभियानों से इस मायने में अलग है कि इसमें कोई ऑर्बिटर नहीं है। इसमें यान को सीधे मंगल की सतह पर उतारा गया। इस यान में मोटे तौर पर दो हिस्से हैं - एक 'लैंडर' और दूसरा 'रोवर'। लैंडर अपनी जगह पर स्थिर रहकर और रोवर सतह पर घूम-फिरकर जानकारियाँ इकट्ठी करता है। रोवर एक रोबोट की तरह काम करता है। इसे सोजोर्नर नाम दिया गया है।

पाथफाइंडर एक विशाल बहुकोणीय गुब्बारे में बन्द था। यह गुब्बारा अपने अंतिम चरण में पैराशूट के सहारे मंगल की सतह के क़रीब पहुँचा। सतह से ठीक पहले पैराशूट को गुब्बारे से अलग किया गया। गुब्बारे ने जैसे ही मंगल को छुआ, पन्द्रह मीटर ऊँचा उछल गया। लगभग डेढ़ मिनट तक की कई उछालों के बाद वह मंगल की सतह पर स्थिर हो सका। पृथ्वी पर स्थित नियंत्रण कक्ष के निर्देश पर गुब्बारा खुलने लगा। यह गुलाब की पंखुड़ियों की तरह खुला। इसके बाद पाथफाइंडर ने अपनी स्थिति की पहली तसवीर पृथ्वी पर भेजी। तसवीर को रेडियो तरंगों के रूप में प्रयोगशाला तक भेजा गया। तसवीर देखकर पाथफाइंडर अभियान से जुड़े वैज्ञानिक रोमांचित हो उठे - 'अरे वाह! इतनी साफ़ तसवीर

● बहुकोणीय गुब्बारा जिसके अन्दर लैंडर और रोबोट बन्द थे।

● बाद में गुब्बारा 92 सेकेण्ड तक सतह पर लुढ़कता रहा।

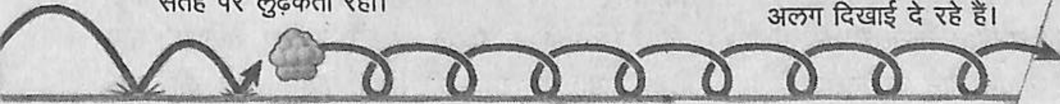

● जब गुब्बारा रुका तो उसकी पंखुड़ियाँ खुलीं। दाएँ चित्र में लैंडर और रोबोट अलग-अलग दिखाई दे रहे हैं।

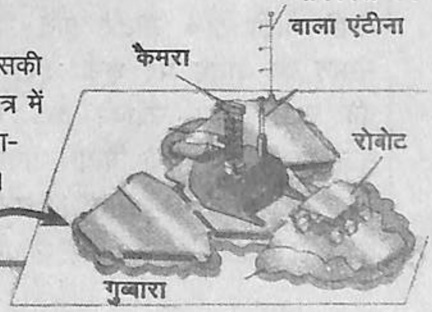

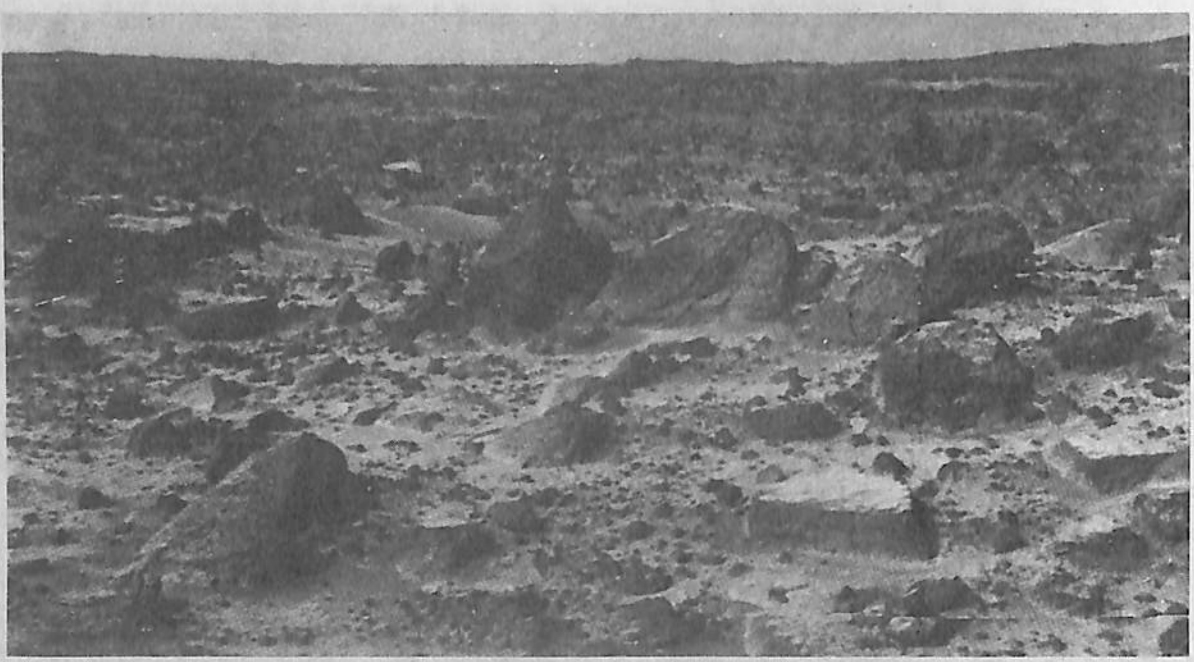

मंगल की नदी घाटी एरिस वैलिस का एक दृश्य। यह सौरमण्डल के किसी भी ग्रह की सबसे विशाल नदी घाटी मानी जाती है। चित्र में दिख रही चट्टानों पर महीन धूल जमी हुई है। बताया जाता है कि मंगल पर चलने वाली तेज़ आँधियों के कारण यह धूल इकट्ठी हुई है।

की तो कल्पना तक नहीं की थी हमने।' थोड़ी कठिनाई के बाद मंगल की सतह के विशेष अध्ययन के लिए तैयार की गई सोजोर्नर बाहर निकली।

पाथफाइंडर मंगल की सतह पर जहाँ उतरा, उस जगह को कार्ल सेगन मेमोरियल स्टेशन नाम दिया गया है। कार्ल सेगन एक प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक थे।

अब यहाँ सोजोर्नर की थोड़ी चर्चा कर लें। पाथफाइंडर के साथ रखा गया यह घुमंतु यंत्र 'सोजोर्नर' छह पहियोंवाली एक गाड़ी है। 24 इंच लम्बी और 19 इंच चौड़ी इस गाड़ी का वज़न 10 किलोग्राम है। दरअसल पाथफाइंडर अभियान की मूल कर्ता-धर्ता यह करामाती गाड़ी ही है। इसमें अत्याधुनिक कैमरे तथा अन्य उपकरण लगे हैं। यह नन्हीं गाड़ी 24 मीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से मंगल की सतह पर घूमी। इस दौरान उसने मंगल की सतह और उसकी कई चट्टानों का काफ़ी नज़दीक से मुआयना किया। अपने अध्ययन में उसने देखा कि मंगल की सतह की बनावट कैसी है। उसमें कौन से पदार्थ हैं। उस पर जीवन होने के लक्षण हैं अथवा नहीं। सच तो यह है कि मंगल यात्रा के मुख्य उद्देश्यों में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है कि क्या कभी वहाँ जीवन था, है अथवा भविष्य में होने की क्या संभावनाएँ हैं।

'सोजोर्नर' को पृथ्वी से ही संचालित किया जा रहा था। उसमें बैटरियाँ लगी हैं, जो सौर ऊर्जा से उसके विभिन्न यंत्रों को चलाती हैं। हालाँकि इस की उम्र केवल एक सप्ताह ही आँकी गई थी। लेकिन वह 4 जुलाई से 24 जुलाई तक लगातार काम करती रही। इस बीच दो-तीन बार इसमें ख़राबी भी आई, जिसे पृथ्वी पर स्थित नियंत्रण कक्ष से ठीक कर लिया गया।

सोजोर्नर से मिली तसवीरों तथा जानकारियों को पूरी तरह समझ पाने में अभी काफ़ी समय लगेगा। लेकिन मोटे तौर पर जो तथ्य सामने आए हैं, उनसे यह प्रमाणित होता है कि मंगल की बनावट और वातावरण में पृथ्वी से काफ़ी कुछ समानता है। सोजोर्नर मंगल के जिस क्षेत्र में उतरा है, उस घाटी को वैज्ञानिकों ने पहले से ही 'एरिस वैलिस' नाम दिया हुआ था। यहाँ की मिट्टी महीन आटे की तरह

मंगल अभियान : एक नज़र में

जैसा कि तुमने लेख में पढ़ा, मंगल के बारे में जानने की कोशिश 1962 में ही शुरू हो गई थी। विभिन्न अभियानों से क्या पता चला, उसका एक संक्षिप्त ब्यौरा -

सन्		कौन-सा यान गया और क्या जानकारी मिली
1962	-	सोवियत संघ ने मार्स -1 यान मंगल की ओर भेजा। लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली।
1964	-	अमरीका ने मैरिनर-3 मंगल की ओर भेजा। अभियान असफल रहा।
	-	मैरिनर-4 ने मंगल ग्रह के चित्र धरती पर भेजे।
1969	-	मैरिनर-6 ने मंगल के 76 फोटो खींचे।
	-	मैरिनर-7 ने 126 फोटो खींचे। इनसे ही यह जानकारी मिली कि मंगल के ध्रुवों पर ठोस कार्बन-डायऑक्साइड के अलावा कुछ भी नहीं है। पहले यह अनुमान था कि वहाँ नहरें हैं।
1971	-	मार्स-2 मंगल की कक्षा में स्थापित। लेकिन लैंडर मंगल की सतह पर नष्ट हो गया।
	-	मार्स-3 मंगल की कक्षा में स्थापित। लैंडर सतह पर 20 सेकेंड तक रुका, फिर नष्ट हो गया।
	-	मैरिनर-9 ने लगभग 7000 फोटो खींचे। इस अभियान से जानकारी मिली कि मंगल की सतह पर नदी की घाटी जैसी रचनाएँ हैं।
1973	-	मार्स-4 मंगल की कक्षा में पहुँचकर नष्ट हो गया।
	-	मार्स-6, मंगल की कक्षा में पहुँचने पर पृथ्वी से इसका सम्पर्क टूट गया।
	-	मार्स-7, मंगल की कक्षा में नष्ट।
	-	मार्स-5, मंगल की कक्षा में स्थापित।
1975	-	अमरीकी यान वाइकिंग-1 और 2 मंगल की कक्षा में स्थापित। इन दोनों यानों ने सबसे महत्वपूर्ण जानकारी एकत्रित की। वाइकिंग-2 ने मंगल के 52,000 चित्र खींचे। इसने ही पहली बार मंगल के चन्द्रमाओं के चित्र काफी नज़दीक से खींचे। इन चित्रों के माध्यम से ही मंगल की सतह का नक्शा बनाया जा सका। मंगल के मौसम की जानकारी भी इन्हीं तस्वीरों से मिली। इस यान का लैंडर 1982 तक मंगल की सतह पर रहा। उसके बाद नष्ट हो गया।
1997	-	पाथफाइंडर मंगल की सतह पर उतरा। इसके साथ गई 'रोवर' (सोजोर्नर) ने कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ भेजीं।

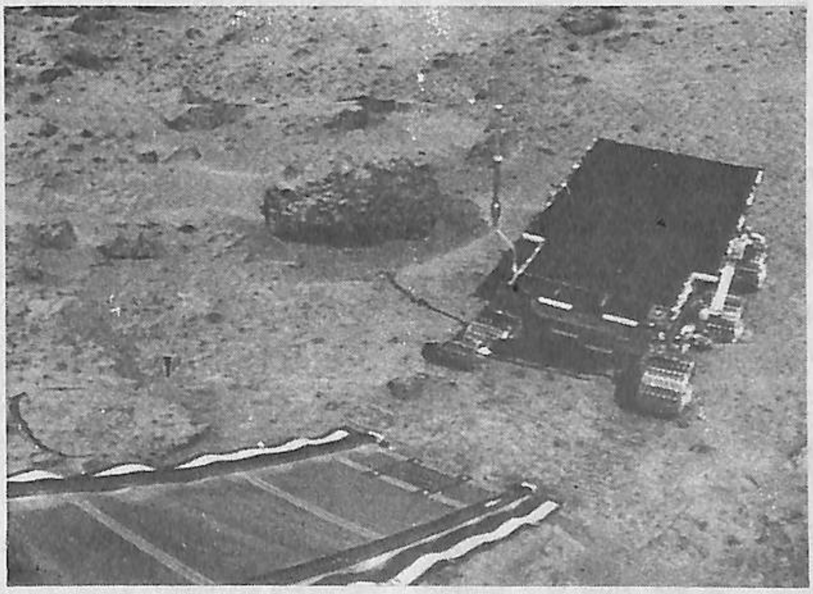

मंगल की सतह पर 'सोजोर्नर'।

'सोजोर्नर' नाम ऐसे मिला!

मंगल ग्रह पर जानकारी एकत्रित करने वाले रोबोट को 'सोजोर्नर' नाम अमरीका की एक छात्रा ने दिया है। अमरीका की प्लानेटरी सोसायटी ने 1995 में नाम चुनने के लिए एक लेख प्रतियोगिता करवाई थी। इसमें पन्द्रह वर्षीय छात्रा वैलेरी एंब्रोश ने भी भाग लिया।

वैलेरी ने अपने लेख में सोजोर्नर ट्रुथ नामक एक दास का ज़िक्र किया। सोजोर्नर ने अमरीका में दासों (गुलामों) की मुक्ति तथा महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया था। सोजोर्नर का अर्थ है - 'यात्री'। चूँकि रोबोट भी मंगल की यात्रा पर जाने वाला था और वहाँ मंगल के सत्य का पता लगाने वाला था। इसलिए वैलेरी ने कहा कि उस रोबोट का नाम 'सोजोर्नर' रखना चाहिए।

सोसायटी ने वैलेरी के सुझाव को मान लिया। ❑

है और आसपास की चट्टानें चिकनी हैं। इनमें से कुछ चट्टानें अलग-अलग रंगों की हैं। अधिकांश का रंग मटमैला लाल है। अनुमान लगाया गया है कि इस इलाक़े में एक अरब से तीन अरब वर्ष पहले भयंकर बाढ़ आई होगी। यह एक विशाल घाटी है। घाटी का पानी कब और कैसे ग़ायब हुआ, इसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सका है।

सोजोर्नर ने एरिस वैलिस के पास की एक ऊँची पहाड़ी का ब्यौरा भी भेजा है। ब्यौरे के मुताबिक यह पृथ्वी की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट से भी अधिक ऊँची है। उसने मंगल पर सूर्योदय व सूर्यास्त की भी तसवीरें भेजी हैं।

मंगल की सतह पर वायुमण्डलीय ताप और दाब का जो अनुपात है, उसके आधार पर यह कहा जा रहा है कि मंगल के ध्रुवों और सतह के नीचे बर्फ़ जमी हो सकती है। मंगल के वायुमण्डल का रंग मटमैला लाल है। जबकि उसका आकाश गहरे नीले रंग का है। वायुमण्डल में कार्बन-डाइऑक्साइड की मात्रा सबसे अधिक 95% है। इसके अतिरिक्त नाइट्रोजन, कार्बन-मोनो-ऑक्साइड, आर्गन, अक्रिय गैसें, और ऑक्सीजन भी हैं। मंगल पर वायु-मण्डलीय दबाव पृथ्वी के दबाव के सौवें हिस्से के बराबर है। रात का तापमान - 76° सेंटीग्रेड तक नीचे चला जाता है जबकि दिन में शून्य से कुछ कम होता है। मंगल का एक दिन 24 घण्टे 37 मिनट का होता है।

ग्रहों में शुक्र के बाद सबसे चमकीले और वज़न के हिसाब से तीसरे नम्बर के ग्रह के बारे में अटकलों का एक दौर ख़त्म होने को है। मंगल के बारे में धरतीपुत्र, अंगार-अंगारक और लोहितांग आदि नामों से बनाई गई कथाएँ पुरानी पड़ चुकी हैं। यही नहीं मंगल पर आबादी के बारे में विज्ञान कथाकारों की रोमांचकारी कल्पनाओं के लिए शायद कोई जगह नहीं बची है। मंगल तो अब सूखे मौसम और पृथ्वी के समान संरचना वाला एक जाना-पहचाना ग्रह है।

परन्तु अभी यह कुतूहल शेष है कि वहाँ कभी जीवन था या नहीं? या इसकी क्या संभावना है? क्या वहाँ मानव बस सकेगा? पाथफाइंडर अभियान से प्राप्त जानकारियाँ अभी इस उत्तर तक पहुँचाने में नाकाफ़ी हैं। क्योंकि पाथफाइंडर व सोजोर्नर मंगल से आँकड़े और तसवीरें ही भेज सके हैं। वे वहाँ की चट्टानों के प्रत्यक्ष नमूने लेकर वापस नहीं आ सकेंगे। लेकिन जैसा कि अभियान का नाम था - 'मार्स पाथफाइंडर' यानी मंगल का रास्ता खोजी अभियान, वह उसने पूरा कर दिखाया है। सोजोर्नर के अपनी क्षमता से अधिक दिनों तक मंगल की धरती पर सक्रिय रहने से वैज्ञानिकों के हौसले बुलंद हैं। अब वे इस जुगाड़ में हैं कि मंगल पर उपलब्ध सौर ऊर्जा का इस्तेमाल कर वहाँ भेजे गए यानों को वापस भी लाया जा सके। ऊर्जा की बचत के लिए पृथ्वी की कक्षा में एक अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित कर वहाँ से मंगल के लिए यान भेजने की भी तैयारी है।

इधर एक और यान सर्वेयर भी मंगल की यात्रा पर है। यह अगले दो साल तक मंगल की परिक्रमा करेगा और मंगल की सतह का नक्शा बनाएगा। सन् 1998, 2001 और 2003 में लगातार मंगल पर यान पहुँचेंगे। सन् 2005 के अभियान में यह इंतज़ाम किया जा सकेगा कि मंगल की मिट्टी धरती पर लाई जा सके। योजना यह भी है कि 2018 तक आदमी मंगल की सतह पर पाँव रख सके। ❑

इस लेख में आए चित्र टाइम, फ्रंटलाइन तथा अमेच्योर एस्ट्रोनॉमी से साभार।

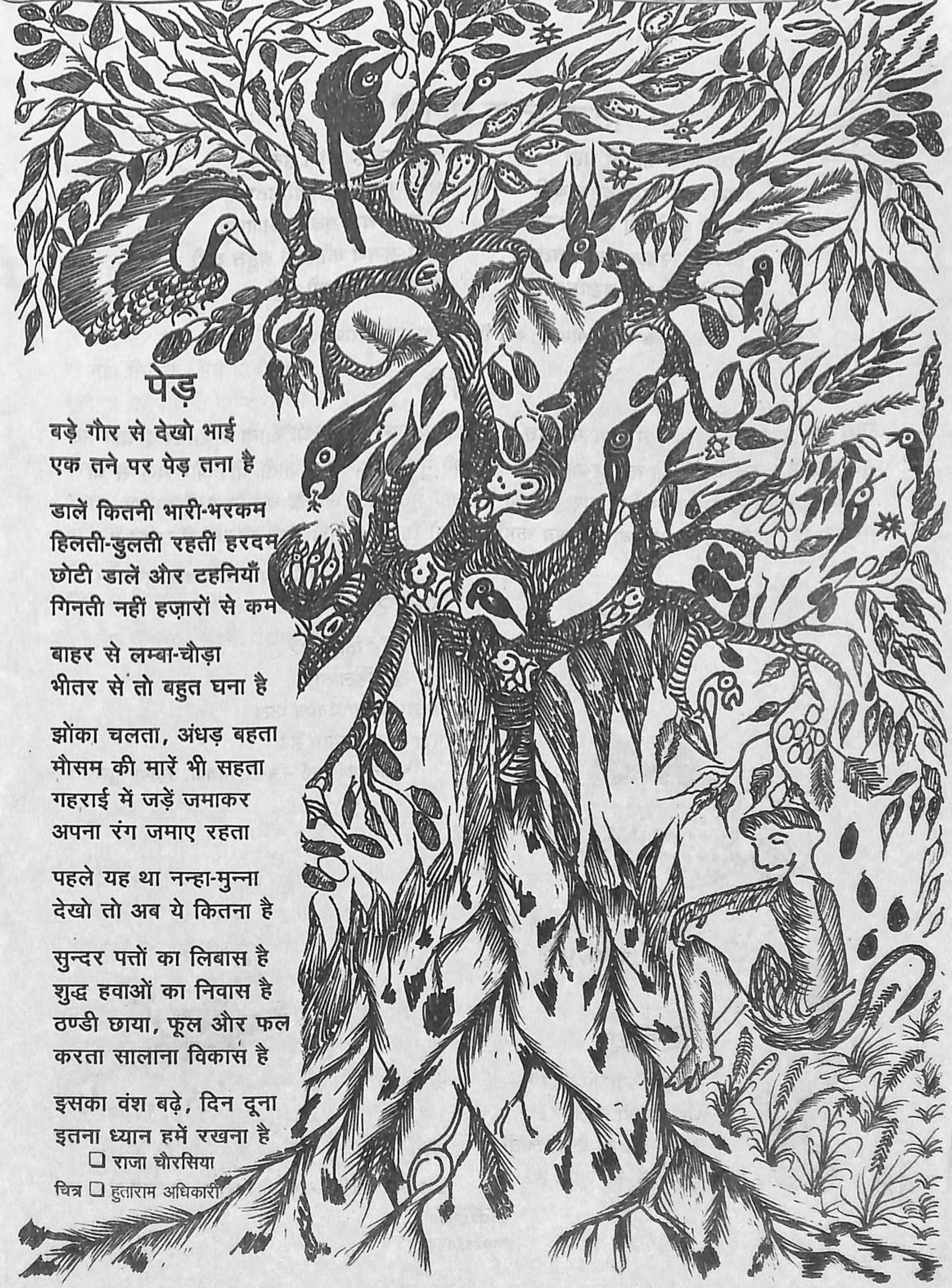

पेड़

बड़े गौर से देखो भाई
एक तने पर पेड़ तना है

डालें कितनी भारी-भरकम
हिलती-डुलती रहतीं हरदम
छोटी डालें और टहनियाँ
गिनती नहीं हज़ारों से कम

बाहर से लम्बा-चौड़ा
भीतर से तो बहुत घना है

झोंका चलता, अंधड़ बहता
मौसम की मारें भी सहता
गहराई में जड़ें जमाकर
अपना रंग जमाए रहता

पहले यह था नन्हा-मुन्ना
देखो तो अब ये कितना है

सुन्दर पत्तों का लिबास है
शुद्ध हवाओं का निवास है
ठण्डी छाया, फूल और फल
करता सालाना विकास है

इसका वंश बढ़े, दिन दूना
इतना ध्यान हमें रखना है

❑ राजा चौरसिया

चित्र ❑ हुताराम अधिकारी

टिक टिक चलती घड़ी

टिक टिक चलती घड़ी
समय की घड़ी बहुत बड़ी
बारह युगों की चक्कर लगाती
हमको हरदम समय बताती
चलते जब हम इसके सहारे
बन जाते हैं काम हमारे
सबेरे हमको जल्दी उठाती
काम पे यह सबको भगाती
ऐसी समय की घड़ी बहुत बड़ी
टिक टिक चलती घड़ी

महेन्द्र श्रीमाली; आठवीं, फालना, पाली, राजस्थान

चटोरी

जब हम पिड़ावली में रहते थे। तब मैं बहुत छोटी थी। बचपन में मुझे घी खाना बहुत पसंद था। सब मुझे चटोरी कहते थे। मैं घी का डिब्बा लेकर छत की मुड़गेरी पर बैठ जाती थी। और मज़े से घी खाती थी। अब मैं बड़ी हो गई हूँ। पर उस घी को नहीं भूल पाती जो कि बचपन में मैंने खाया था। पर तब जो मज़ा घी में आता था वह अब कहाँ। गाँव में ताऊ जी मुझे अभी भी चटोरी कहते हैं।

वर्षा श्रीवास्तव, पाँचवीं, मुरैना. म. प्र.

दो छोटी कविताएँ

बन्दर

काले मुँह का बन्दर है
पेड़ खूब हिलाता है
कच्चा हो या पक्का फल
पूरा ही खा जाता है।

दोनों कविताएँ – बन्टी, पाँचवीं, बड़ौदा, गुजरात

राजमणी गोठी, पाँचवीं, घुन्सी, म. प्र.

चिड़िया

चिड़िया प्यारी प्यारी है
धीरे से आ जाती है।
मम्मी जो भी केला लातीं
चुपके से खा जाती है।

ऋअंका सोनी, छठवीं, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

बाल झूले में फँसे

एक दिन मैं अपनी सहेली ध्वजा के घर झूला झूल रही थी। मुझे बहुत मज़ा आ रहा था। अचानक मेरे बाल झूले की रस्सी में फँस गए। मैंने और ध्वजा ने बहुत कोशिश की लेकिन मेरे बाल झूले की रस्सी में से नहीं निकले। मैंने दीदी को बुलाया उन्होंने भी कोशिश की मगर मेरे बाल नहीं निकले तो मैंने अपनी मम्मी को बुलाया। मम्मी ने भी प्रयास किया। जबं मेरे बाल किसी तरह नहीं निकले तब मेरी मम्मी ने मेरे बाल काट दिए। तब कहीं जाकर मैं झूले से निकल सकी।

नेहा श्रीवास्तव, चौथी, अंतागढ़, बस्तर, म. प्र.

अपर्णा मंडलोई, छठवीं, धार, म. प्र.

मेरी शरारतें

जब मैं छोटी-सी थी तब बहुत नटखट थी। हर चीज़ को छूना मेरी आदत थी। एक बार मौसी जी ने बहुत गर्म तेल ठण्डा होने के लिए कमरे में रख दिया। मैं स्कूल से दौड़ी-दौड़ी आई और उसी कमरे में जा पहुँची। मौसी जी के बहुत मना करने पर भी मैं नहीं मानी। मैं उल्टी-उल्टी चल रही थी और पीछे तेल रखा हुआ था। मैं पीछे लौटती चली गई और मेरे पैर से कटोरी लुढ़क गई। गर्म तेल मेरे पैर पर पड़ते ही मोटे-मोटे फफोले पड़ गए। मुझे लगा कि मेरे प्राण निकलने वाले हैं। मेरे पापा जी मुझे तुरन्त ही डॉक्टर के पास ले गए। मैं रोई जा रही थी। कह रही थी, पापा जी बचाओ, मम्मी जी बचाओ। डॉक्टर ने जैसे ही पट्टी करना चाहा खाल पूरी तरह पलट गई। मैं बहुत ज़्यादा परेशान थी। मम्मी-पापा सभी धैर्य दिला रहे थे। ठीक होने में 15 दिन का समय लगा। पापा जी ने मेरी देखभाल बहुत ज़्यादा की। जलने का निशान आज भी मुझे मेरी ग़लती की याद दिलाता है।

रुचि शर्मा, पाँचवीं, गोपालपुरा, मुरैना, म. प्र.

बिल्ली के बच्चे

बिल्ली के तीन बच्चे थे। एक काला, एक भूरा और एक सफ़ेद।

उन्होंने एक चूहा देखा...

और वे उसके पीछे भागे...

चूहा उचककर आटे के डिब्बे में कूद गया।

एक-एक करके वे तीनों भी डिब्बे में कूद गए। लेकिन इस बीच चूहा निकल भागा।

तीनों बच्चे मायूस होकर डिब्बे से बाहर निकले। उनका रंग सफ़ेद हो गया था।

बिल्ली के तीन सफ़ेद बच्चों को एक मेंढक दिखा। वे उसे पकड़ने दौड़े।

मेंढक धुएँ के पाइप में घुस गया। वे तीनों भी पीछे-पीछे पाइप में घुस गए।

मेंढक पाइप के दूसरे सिरे से बाहर निकला...

 उसके पीछे बिल्ली के तीन काले बच्चे भी।

काले बच्चों ने पास के तालाब में एक मछली देखी।

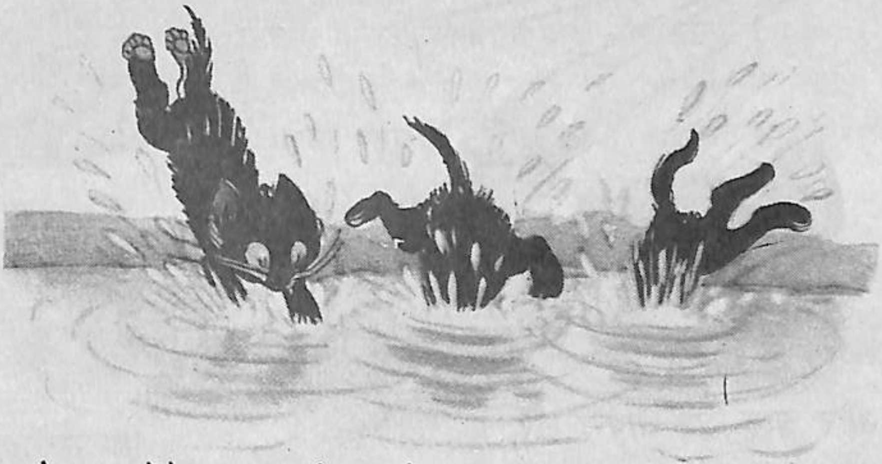

और उन्होंने तालाब में छलाँग लगा दी।

मछली तैरकर दूर निकल गई।

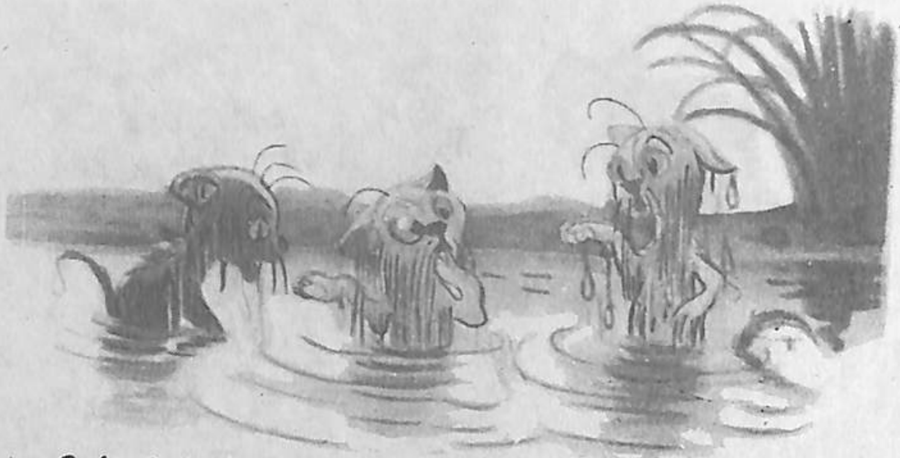

तीनों गीले होकर तालाब से बाहर निकले।

और चल दिए वापस घर..।

बिल्ली के तीन बच्चे। एक काला, एक भूरा और एक सफ़ेद।

(स्टोरीज़ ऑफ़ पिक्चर से साभार)

बुद्धू बनाया

मेरी एक सहेली है उसने मुझसे एक दिन कहा कि मेरी दीदी का जन्मदिन है तुम ज़रूर-ज़रूर आना। मैंने कहा ठीक है, आ जाउँगी। स्कूल से मैं घर जल्दी आ गई। मैंने मम्मी से कहा, मेरी सहेली की दीदी का जन्मदिन है, उसने मुझे बुलाया है। तो मम्मी ने मुझे नई फ्रॉक पहना दी और नए कंगन पहनाए। मुझे एक सुन्दर--सा उपहार दिया। मैं खुशी–खुशी गई। मैंने सहेली से कहा तुम्हारी दीदी का जन्मदिन कब मनेगा। तो रीना बोली मेरी दीदी का जन्मदिन तो है ही नहीं। तुम तो मेरे घर नहीं आती इसलिए बुलाया है। फिर उसने मुझसे उपहार नहीं लिया। उसकी मम्मी ने चाय और बिस्कुट खिलाए।

मोना जैन, चौथी, सागर, म. प्र.

निलीमा जोशी, धार, म. प्र.

मच्छर जी

मच्छर जी मच्छर जी
मत हमें काटो
अपने प्यार को देखो
दुनिया में बाँटो
रातों को आते
कानों में कुछ कह जाते
ऊपर से देखो भैया
डंक मार जाते

मच्छर जी मच्छर जी
ज़रा करो रहम
मत काटो हमको भैया
होगी परेशानी कम
छोटे से बड़ों तक
सब हैं परेशान
मच्छर जी मच्छर जी
अब जाना तुम मान

विनोद प्रजापत, दसवीं, नांदेड़,
उज्जैन, म. प्र.

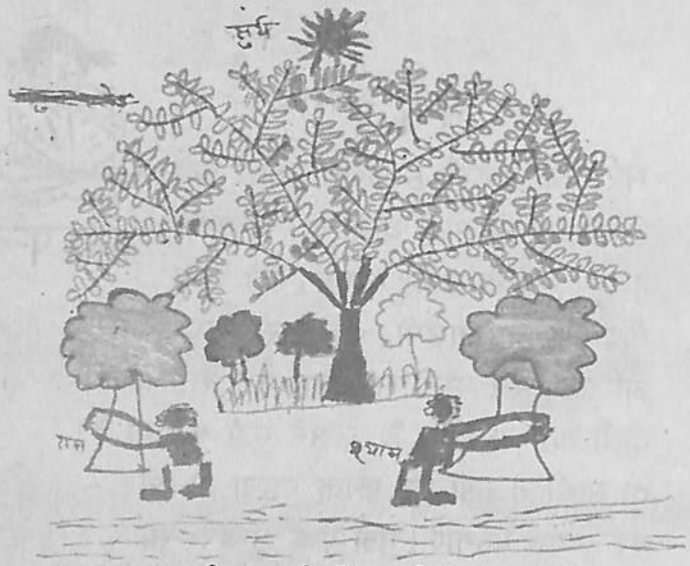

बलराम पाटीदार, पाँचवीं, नालीखेड़ा, मन्दसौर, म. प्र.

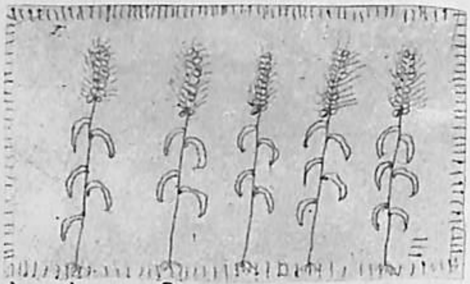

अभिषेक गौर, दूसरी, हरसूद, खण्डवा, म. प्र.

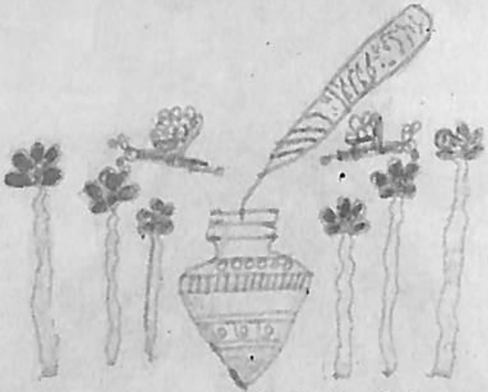

जीतेन्द्र चौहान, सातवीं, रेहटी, सीहोर, म. प्र.

गोपी कुशवाह, पवारखेड़ा, म. प्र.

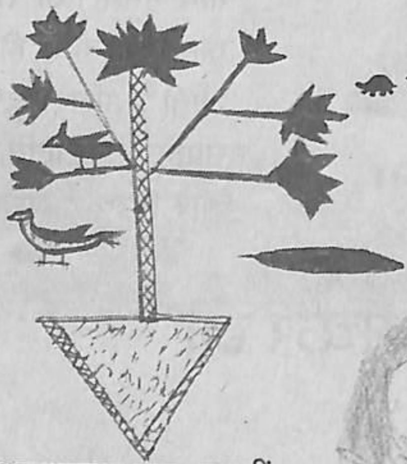

भगवानदास साहू, सातवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

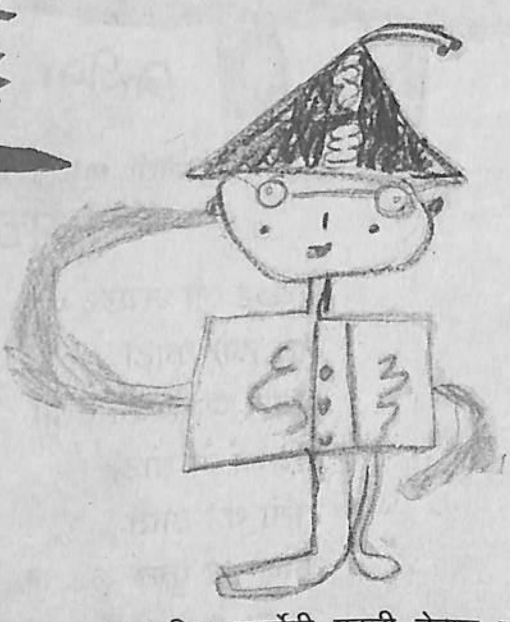

कनिष्क चतुर्वेदी, पहली, देवास, म. प्र.

आशीष वर्मा, आठवीं, देवरबीजा, दुर्ग, म. प्र.

सोहित अग्रवाल, पाँचवीं, नौगाँव, छतरपुर, म. प्र.

कहानी

बुलबुले का एक दिन

❑ जेम्स ए. स्मिथ

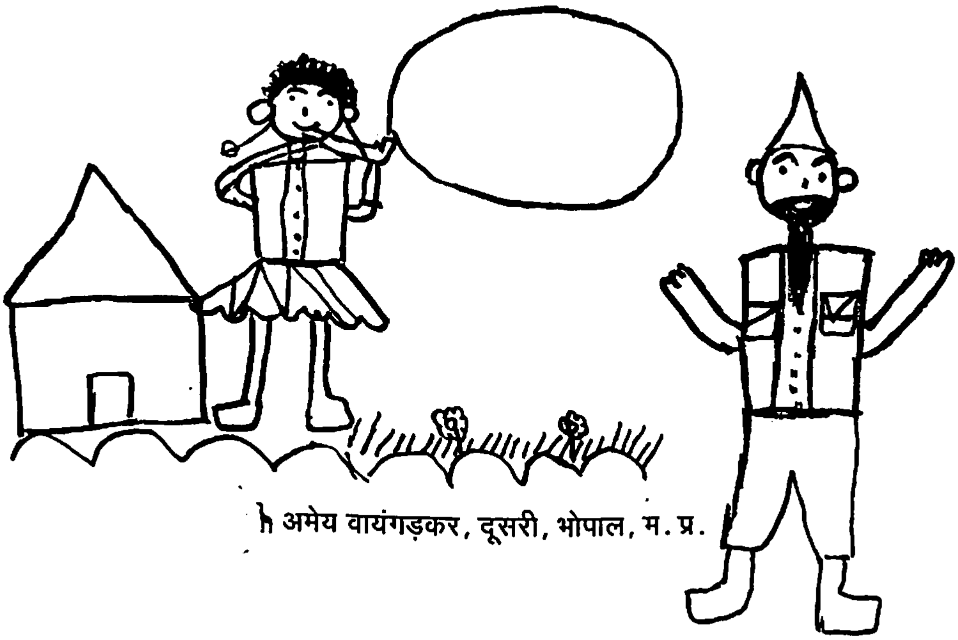

चित्र: अमेय वायंगड़कर, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

एक समय की बात है। हुमा नाम की एक लड़की थी। वह अहमदनगर नाम के शहर के किनारे की पहाड़ी पर अपने चाचा हामिद के साथ एक पुराने टूटे-फूटे घर में रहती थी।

दिन में हुमा हामिद चाचा के साथ उनके छोटे से खेत के कामों में हाथ बँटाती थी। रात को, खाने के बाद, हुमा चाचा के साथ सामने वाले बरामदे में बैठकर अपना सबसे प्यारा खेल खेलती थी।

हुमा को शौक था बुलबुले बनाने का। और बुलबुले भी कोई ऐसे-वैसे या साधारण नहीं, ख़ूब बड़े-बड़े बुलबुले। हाँ जी, हुमा ने कई सालों तक ख़ूब बड़े-बड़े बुलबुले बनाने का अभ्यास किया था। और उसके बुलबुले ख़ूब-ख़ूब देर तक टिकते भी थे। क्योंकि वह उन्हें बनाने के लिए एक ख़ास तरह के मिश्रण का इस्तेमाल करती थी। वह सिर्फ़ साबुन और पानी से बुलबुले नहीं बनाती थी, जैसा कि कई लोग करते हैं। हुमा स्वभाव से ही खुरापाती थी। वह अपने मिश्रण के साथ लगातार कुछ-न-कुछ प्रयोग करती रहती थी–ऐसे बुलबुले बनाने की कोशिश में जो बहुत देर तक टिके रहें।

पहले हुमा ने एक दिन साबुन-पानी में थोड़ा-सा गोंद मिला दिया था। पर इससे घोल गाढ़ा हो गया। सो एक रात उसे यह बात सूझी कि शायद गोंद को मिट्टी के तेल से कुछ पतला किया जा सकता है। ऐसा करने से फ़ायदा तो हुआ। फिर, एक रात उसने उस घोल में पावडर वाला साबुन मिलाने की कोशिश की। उस रात उसने एक तीन फीट चौड़ा बुलबुला बनाया। वो पाँच मिनट तक हवा में तैरता रहा और फिर हामिद चाचा की नाक से टकराकर फट गया।

हुमा को मज़ा आने लगा। उसने सोचा कि थोड़ा-सा शैम्पू शायद कुछ मदद करे। वैसा ही हुआ। फिर उसने उसमें थोड़ा सूखा मैदा मिला दिया और फिर थोड़ा-सा शीरा भी। फिर तो उसके बुलबुले बड़े, और बड़े होते गए। वे बहुत-बहुत देर तक टिकने लगे।

हामिद चाचा, जिनकी हरदम ही हुमा के बुलबुलों से टक्कर होती रहती थी, हमेशा कहते रहते, "हुमा, किसी दिन तुम अपने बुलबुलों के चक्कर में

अंजली, छठवीं, भोपाल, म.प्र.

मुसीबत में पड़ जाओगी। यह बिल्कुल ठीक नहीं है कि बुलबुले इतने बड़े हों और इतनी-इतनी देर तक टिके रहें!"

पर हुमा को तो बुलबुले बनाने में मज़ा आता था। सो वह तो बस प्रयोग पर प्रयोग करती जाती थी। कुछ न कुछ गड़बड़झाला उसके दिमाग़ में चलता ही रहता।

एक छुट्टी के दिन खाना खाने के बाद दोपहर में, हुमा और हामिद चाचा पहाड़ पर बसे अपने घर के बरामदे में बैठे थे। हुमा ने अपने बुलबुले के मिश्रण को घोला। इस बार उसने घोल में ज़रा-सा डामर भी मिलाया था, जो उसे नीचे शहर में बन रही एक नई सड़क के किनारे पड़ा मिल गया था। वह दौड़कर घर के अन्दर गई, और बुलबुले उड़ाने की नली को उठा लाई। फिर नली से लगी घोल में फूँकने।

हामिद चाचा ने अपनी बीड़ी सुलगाते हुए उसको टोका, "देख हुमा, मैं कहता हूँ, तू इन बुलबुलों के कारण किसी दिन झमेले में पड़ जाएगी।"

पर हुमा ने चाचा की बात पर ध्यान नहीं दिया और फूँकना जारी रखा। शुरू में फूँकना काफ़ी मुश्किल लगा। पर फिर धीरे-धीरे बुलबुले बनने लगे, और फूँकना आसान होता गया। हुमा ने एक गहरी साँस भरी और फूँकती गई, फूँकती गई और बुलबुला बड़ा, और बड़ा होता गया। जल्दी ही यह बुलबुला उसके अब तक बनाए तमाम बुलबुलों में सबसे बड़ा हो गया। और वह तो और भी बड़ा, और बड़ा होता ही जा रहा था। हुमा को अब अपने सामने नीचे का शहर दिखना बन्द हो गया। सामने का बगीचा भी, यहाँ तक कि हामिद चाचा भी नहीं दिखाई दे रहे थे।

उसे कहीं पीछे से हामिद चाचा की आवाज़ आती सुनाई दी, "देख हुमा, ज़रा ध्यान रखना! किसी दिन तू मुसीबत में — यह बिलकुल वाजिब नहीं....।"

इससे आगे हुमा को कुछ सुनाई नहीं दिया। बुलबुला इतना बड़ा हो गया था कि वह उसे ज़मीन से टकराने से बचाने में लगी हुई थी। वह धीरे-धीरे उसमें और फूँकती गई, फूँकती गई! फूँकते-फूँकते उसकी साँस फूलने लगी थी! पर बुलबुला बढ़ता ही गया, बढ़ता ही गया।

हुमा धीरे-धीरे बड़ी हिफाज़त से बरामदे के किनारे तक सरक आई ताकि बुलबुला किनारे से नीचे लटक सके। दस फीट, ग्यारह फीट, बारह फीट - और बुलबुला तब भी बड़ा होता गया। तेरह फीट, चौदह फीट - और हुमा को बस इतना ही सुनाई दिया कि हामिद चाचा कह रहे थे, "या मौला!"

तभी एक तेज़ "पपृ" की आवाज़ हुई और बुलबुला नली से अलग हो गया। एक पल के लिए वह काँपा और थिरका। पर वह फूटा नहीं। फूटने के बजाय वह लुढ़कने लगा, पहले धीरे-से, और फिर तेज़, और तेज़। वह पहाड़ी से नीचे की ओर लुढ़क चला। हामिद चाचा उचककर खड़े हो गए। "हुमा," वे चीखे, "मैंने नहीं कहा था कि किसी दिन....।" पर हुमा ने इससे आगे नहीं सुना। वह तो ढलान पर अपने बुलबुले का पीछा करती दौड़ती जा रही थी।

पहाड़ी ढलान पर रमेश के घर की बूढ़ी गाय घास चरती ऊपर चढ़ रही थी। उसने घास चरना छोड़कर ऊपर देखा और चिल्लाई, "बाँ," और फिर बुलबुले से टकरा गई। बुलबुला इतना चिपचिपा था कि उसने गाय को अपने साथ उठा लिया और आगे लुढ़क गया।

इदरीस भाई हामिद चाचा के लिए अण्डे लेकर आ रहे थे। उन्होंने ऊपर की ओर देखा तो बुलबुला उन्हें अपनी ओर आता दिखाई दिया। इससे पहले कि वह चिल्ला पाते, "बचाओ", बुलबुले ने उन्हें भी उठा लिया और वे उसके साथ ढलान पर लुढ़क चले, अहमदनगर शहर की ओर।

भूरी, मोहल्ले की बिल्ली, इदरीस भाई के पीछे-पीछे चल रही थी। अगले ही पल वह भी बुलबुले में थी, शहर की ओर लुढ़कती हुई। बुलबुले के पीछे-पीछे हुमा दौड़ी जा रही थीं, और उसके पीछे हामिद चाचा बोलते जा रहे थे, "हुमा, मैंने तुमसे कहा था....।"

जल्दी ही बुलबुला शहर की मेन रोड पर पहुँच गया। इस छोटे से शहर के एक मात्र पंसारी, फूलचन्द जी, दुकान बन्द करके अपने ताँगे पर धीरे-धीरे, इत्मीनान से घर की ओर जा रहे थे। वे ताँगे के हिचकोलों और थकान के कारण लगभग सो चुके थे। सोनी, उनकी घोड़ी, उनकी मदद के बग़ैर ही घर का रास्ता पहचान लेती थी। इससे पहले कि फूलचन्द जी को यह समझ आता कि उन्हें क्या हुआ, बुलबुला उनसे टकरा गया और घोड़ा, ताँगा, सामान सहित फूलचन्द जी मेन रोड पर लुढ़क चले।

अब तक घोड़ी ने हिनहिनाना, बिल्ली ने चिल्लाना और गाय ने रम्भाना शुरू कर दिया था। इदरीस भाई चीख रहे थे और फूलचन्द जी चिल्ला रहे थे, "बचाओ!"

मेन रोड पर हर कोई यह देखने को पलटता कि यह क्या चीज़ थी जो इतना शोर मचा रही थी। हर कोई अचम्भे से खड़ा देखता रह जाता कि एक विशाल बुलबुला सड़क पर चला आ रहा है जिसमें से हाथ, पैर और जानवर बाहर को निकले हुए हैं। और इससे पहले कि लोग बचकर भागते, बुलबुला उनसे टकरा जाता!

बुलबुले ने डॉक्टर मनवानी के अस्पताल के बाहर खड़ी मोटर साइकिल को उठा लिया। फिर अपने घर के दरवाज़े पर बैठी सुपारी काटती मुनिया की दादी उसकी चपेट में आ गई। सड़क के किनारे कुछ लड़कियाँ सितोलिया खेल रही थीं। वे भी अचानक बुलबुले में ग़ायब हो गईं।

दो कुत्ते एक-दूसरे का पीछा करते जा रहे थे। अगले ही पल वे भी बुलबुले में फँस गए। हर कोई और हर कुछ जो मेन रोड पर था और किसी

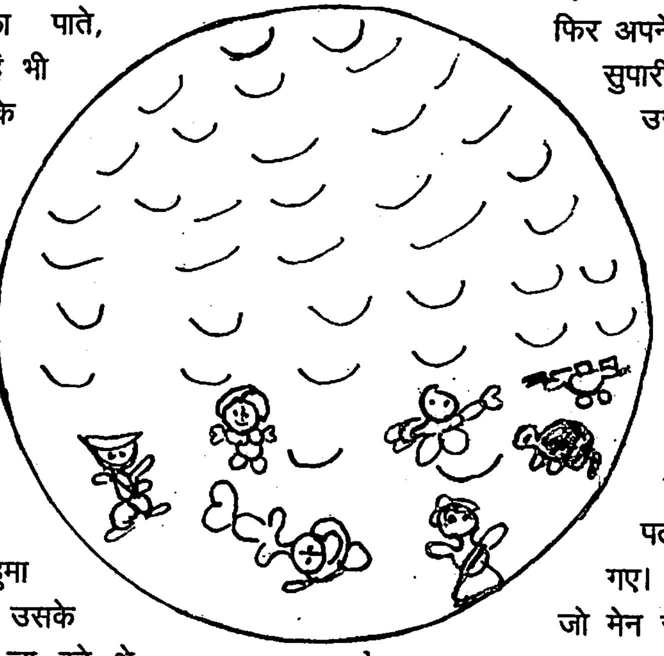

इशा भटनागर, छठवीं, भोपाल, म. प्र.

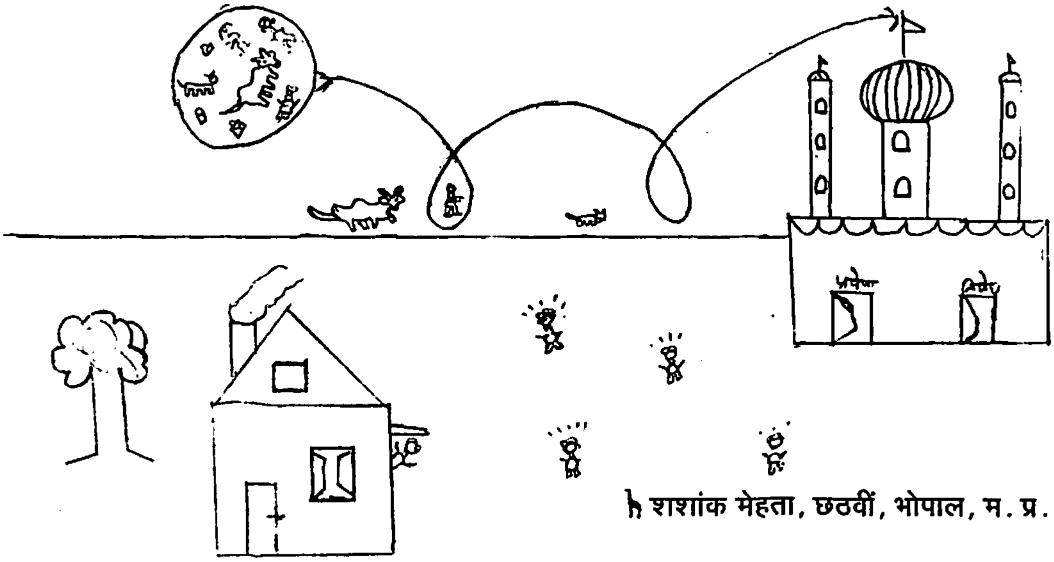

शशांक मेहता, छठवीं, भोपाल, म. प्र.

चीज़ से बँधा हुआ नहीं था, उस बेहद बड़े चिपचिपे बुलबुले में उलझता जा रहा था।

अब तक हुमा और हामिद चाचा भी मेन रोड तक पहुँच चुके थे। वो दोनों घबराए हुए पीछे दौड़ रहे थे। उनके आगे-आगे बुलबुला शहर की मुख्य सड़क पर लुढ़कता जा रहा था, अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को अपने लपेटे में लेता हुआ।

"हामिद चाचा, हामिद चाचा," हुमा चिल्लाई, "इसे मैं कैसे रोकूँ? क्या करूँ?"

और हामिद चाचा सिर्फ़ इतना ही कह सके, "हुमा, मैंने तुमसे कहा था कि किसी दिन ....।"

मेन रोड के अन्त में मस्जिद थी। छोटी-सी, बहुत पुरानी, पर बहुत ख़ूबसूरत मस्जिद। इस शहर के सारे लोगों को उस पर बहुत फ़ख्र था। क्योंकि मस्जिद की एक ख़ूबसूरत लम्बी, ऊपर से ख़ूब नुकीली मीनार भी थी। बुलबुला सड़क पर लुढ़कता हुआ, अपने में ढेर सारे लोग, जानवर और दूसरा सामान भरे हुए, सीधे इस पुरानी मस्जिद की ओर ही बढ़ा जा रहा था।

"हाय रब्बा," हुमा चीखी, "ये सारे लोग मारे जाएँगे और यह सब मेरा कसूर है!"

अब तक बुलबुले की चाल इतनी तेज़ हो गई

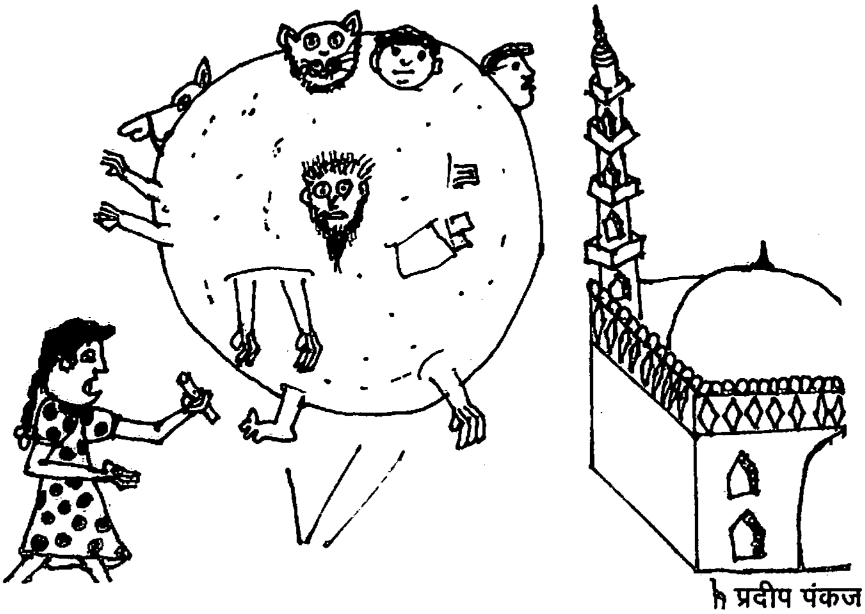

प्रदीप पंकज, लखनऊ, उ. प्र.

थी कि वह रह-रहकर टप्पे खाता आगे बढ़ रहा था। और क्या शोर था। सब लोग चिल्ला रहे थे, गला फाड़कर रो रहे थे और सारे जानवर भी सुर में सुर मिला रहे थे। बुलबुले ने मस्जिद से टकराने के ऐन पहले एक बड़ा सा टप्पा खाया - और वह उचककर मीनार की नोक पर जा टिका। एक लम्हे के लिए वह वहाँ टिका रहा। और फिर एक ख़ूब लम्बी 'सस्स्' की आवाज़ के साथ, जो कि हुमा की साँस छूटने की आवाज़ थी, बुलबुला ख़त्म हो गया।

और फिर क्या फैलारा मचा था! बुलबुले में से लोग, गाड़ियाँ, जानवर, ठेले, किराने का सामान, ईंट-पत्थर, सब कुछ निकलकर मेन रोड के छोर पर बिखर गया था। सब कुछ वहाँ एक गन्दे, चिपचिपे पदार्थ में अँटा पड़ा था।

हुमा के बुलबुले के फूटने के बाद शहर को साफ़ करने में पूरे चार हफ़्ते लग गए। इससे पहले कभी ऐसा कुछ नहीं हुआ था। साल भर तक लोग अपने कपड़ों और बालों पर से हुमा के खुरापाती प्रयोग को साफ़ करते रहे थे। अहमदनगर में कोई कभी बुलबुले के दिन को नहीं भूला।

और रही हुमा की बात। सब लोगों ने चन्दा करके उसे आगे पढ़ाई करने बड़े शहर के बड़े स्कूल में भेज दिया। ताकि वहाँ वह पूरे शहर को परेशान किए बग़ैर अपने प्रयोग जारी रख सके।

हामिद चाचा अक़्सर हुमा को याद करते थे। हर रात खाना खाने के बाद वे बरामदे में अकेले

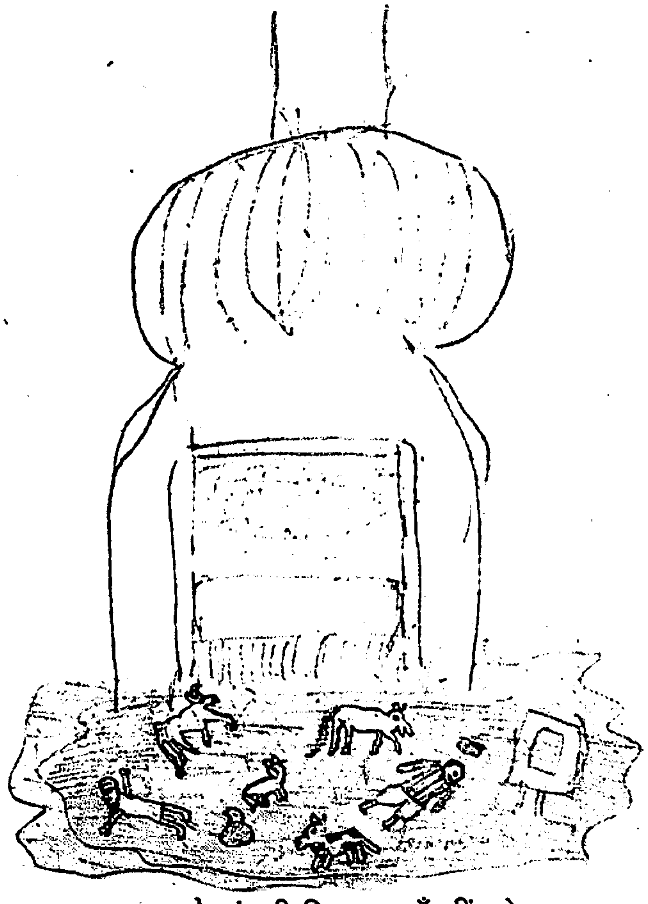

संचारी विस्वास, पाँचवीं, भोपाल, म. प्र.

बैठकर अपनी बीड़ी सुलगाते और कहते, "वाह हुमा, मैं जानता था कि किसी दिन अपने प्रयोगों के चलते तुम बहुत तरक्की करोगी!"

अंग्रेज़ी से रूपांतरण : दुलदुल विश्वास

(यह कहानी कुछ बच्चों को पढ़कर सुनाई गई थी, जिसके आधार पर उन्होंने चित्र बनाए।)

माथापच्ची के हल : अगस्त, 97 के

1. बीच की संख्या होगी 81

2.

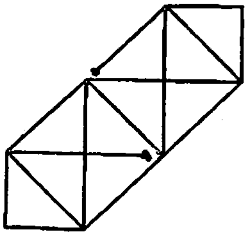

3. बोलकर कहेगा, क्योंकि वह देख नहीं सकता, लेकिन बोल तो सकता है।

4. 9 अनुपात 4

5. 22 बच्चे पिकनिक पर गए और हरेक ने 28 रुपए दिए।

6.

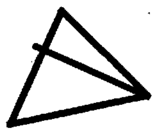

8.

खेल कागज़ का

हवाई जहाज

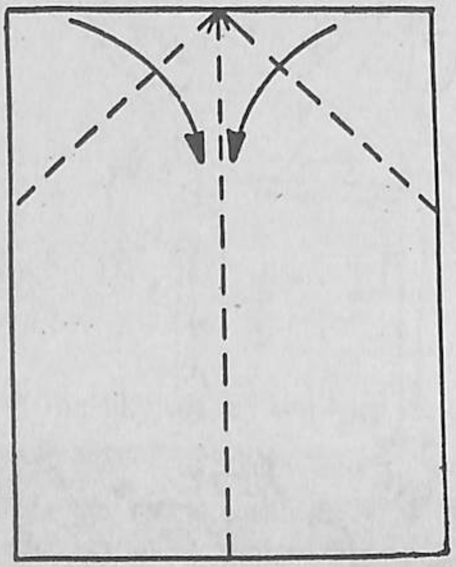

1. एक $8\frac{1}{2}$ × 11 इंच का कागज़ लो। उसे लम्बाई में बीच से मोड़ लो। मोड़ पक्का करके खोल लो। अब ऊपर वाली टूटी रेखाओं को तीर की दिशा में मोड़ो।

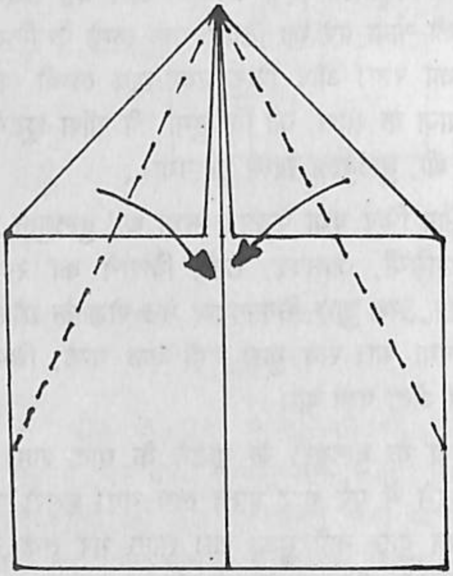

2. इस तरह। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

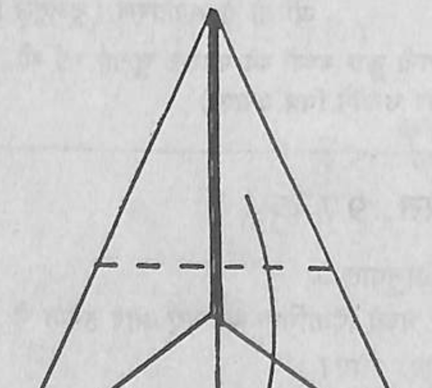

3. इस तरह की आकृति बनेगी। अब आकृति पर दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

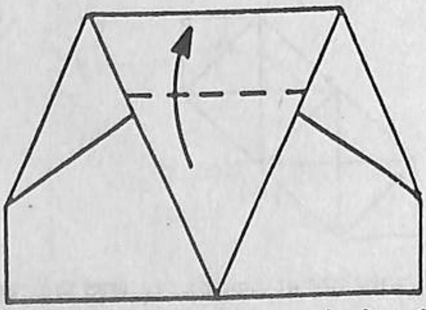

4. इस तरह। अब टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में ऊपरी परत को मोड़ो।

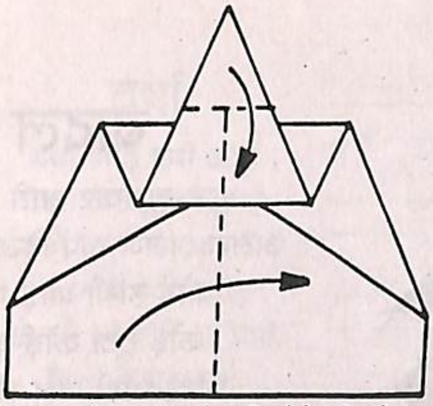

5. अब पहले ऊपर के तिकोने हिस्से पर बनी टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। फिर आकृति को बीच से मोड़ लो।

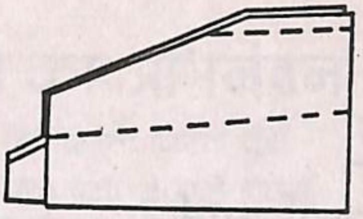

6. इस तरह की आकृति बनेगी। अब चित्र में दिख रही बड़ी टूटी रेखा पर से ऊपरी परत को मोड़ो। आकृति को पलट कर दूसरी तरफ भी इसी तरह से मोड़ बना लो। ऊपर जो छोटी टूटी रेखा बनी है उसे नीचे की ओर मोड़ .लो। आकृति को पलट कर उस ओर ऊपर की ओर मोड़ो। इससे तुम यह तय कर सकते हो कि हवाई जहाज़ किस दिशा में मुड़ेगा। अगर इन मोड़ों की दिशा बदल दो यानी नीचे वाले को ऊपर और ऊपर वाले को नीचे की ओर कर दो तो हवाई जहाज़ की दिशा भी बदल जाएगी।

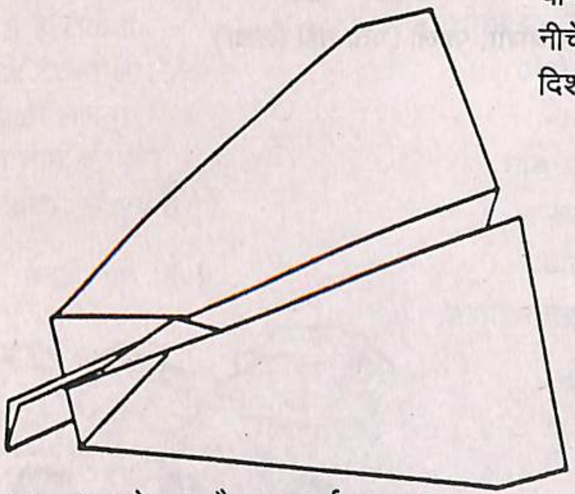

7. यह हो गया तैयार हवाई जहाज़।

बूझो पहेलियाँ

(1)

मम्मी की साड़ी समेटी न जाए
पापा के पैसे गिने न जाएँ

(2)

एक लाठी की सुनो कहानी
भरा है जिसमें मीठा पानी

(3)

एक बिल में पचासों नाग
फन रगड़े तो उगले आग

(4)

कुछ खट–खट है
कुछ मल–मल है
करता है वह नींद हराम
खून चूसना उसका काम।

हितेष व्यास, देवास, म. प्र.

मेरा पन्ना

वर्षा आई

रिमझिम रिमझिम वर्षा आई
झमझम झमझम वर्षा आई
पेड़ पौधे भी नाच उठे हैं
नदियों में पानी है भर आया
सूरज का छुपने का वक्त आया
वर्षा है सबको भिगाती
उनके कपड़ों को नहलाती

शुभम श्रीवास्तव, दूसरी,
कोरबा, म. प्र.

मेघा जोशी, पहली (पता नहीं लिखा)

बादल

झूम-झूमकर आते बादल
अलग अलग रूप दिखाते बादल
कोई हाथी कोई घोड़ा
कोई टूटा कोई जुड़ा
छोटी-छोटी जल की बूँदें
भर देतीं नदी तालाब नाले
ये होते हैं बड़े काले
झूम-झूमकर आते बादल।

पंकज पोरवाल, बालागुड़ा,
मन्दसौर, म. प्र.

बारिश आई

बारिश आई बारिश आई
रंग बिरंगे बादल लाई
टिपक-टिपककर पानी गिरता
फुदक-फुदककर चिड़िया खेलती
टर टर टर मेंढक बोले
धीरे से सूरज आँख खोले
हरी दूब और नन्हे पौधे
जल्दी से सोकर उठते हैं
जिधर भी देखो पानी ही दिखता
प्यारे-प्यारे फूल खिलते हैं
कभी-कभी बादल गरजता ऐसा
बजे ढोल कहीं पर जैसा
कभी बिजलियाँ दिखलाती हैं
आग जैसा अपना बदन
कभी पत्तों को नचाते
अपने सुरों में राग से पवन

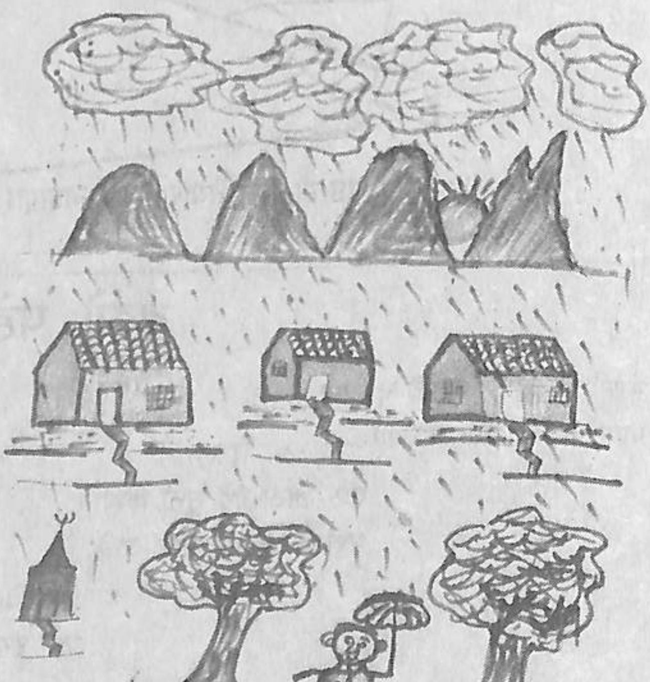

चित्र और कविता दोनों – कृष्ण कुमार साहू, रमतला, बिलासपुर, म. प्र.

वर्षा

वर्षा आई वर्षा आई
देखो कैसी वर्षा आई
घर में बैठने को कहती है
न जाने देती बाहर
खेलने भी नहीं जा पाते
कैसी है यह वर्षा
झूम के आई वर्षा
वर्षा रानी, वर्षा रानी
अब तो बन्द हो जाओ
और बाहर जाने दो
स्कूल भी जाने दो
वर्षा आई तो मम्मी
खेलने से है रोकती
पर घर में बैठना भी
अच्छा नहीं लगता
काग़ज़ की नाव बनाकर
तैराना बस अच्छा लगता है

चंचला शर्मा, छठवीं, धार, म. प्र.

शाहीन, छठवीं, शहडोल, म. प्र.

बरसा का अभिनंदन

टिप-टिप करती गिरती बूँदें
सबको पता चला आ गई बरसा
पहली बूँद बरसा की गिरी
तो चारों ओर आ गई जान
दिखी चारों ओर हरियाली ही हरियाली
बहने लगीं बहकी हवाएँ
आ गईं मेंढक की आवाज़ें
नदी में आ गई बाढ़
पहली बूँद से पौधे में आ गई जान
लेकिन फसल में हो गया नुकसान
जब बरसा गिरती छत के ऊपर मानो
घोड़ों के पैरों की आवाज़ें हों छत के ऊपर
चारों ओर बिखरने लगी खुशबू
कदम-कदम पर फूलों से
जब बारिश के साथ सूरज आता
आसमान में इन्द्रधनुष दिखाता
जब रात हुई आया अंधेरा
उजाला देखा तो हो गया आसमान न्यारा

अजूरा, कटक, उड़ीसा

पानी ही पानी

घर में पानी बाहर पानी
बरस रही है बरखा रानी
इन्द्रधनुष ने रंग बिखेरे
नाच उठी है गुड़िया रानी
बादल छाए बूँदें बरसें
रिमझिम-रिमझिम लगे सुहानी
भुजिया खाते-खाते दादी
हमें सुनाए एक नई कहानी

रविकान्त चौरे, आठवीं,
सनखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

कुर्सी बनाओ

इस बार तुम्हारे लिए गत्ते से बनाई जा सकने वाली कुर्सी के बारे में दे रहे हैं। इसके लिए तुम्हें मोटे गत्ते का एक बड़ा टुकड़ा जुगाड़ना होगा। और साथ ही कैंची, पेंसिल भी ले लो। यहाँ दिए गए चित्रों के अनुसार अपने गत्ते पर आकृतियाँ बना लो। उसके बाद आकृतियों को काटकर अलग कर लो। आकृति-3 को दो बार बनाना क्योंकि इससे कुर्सी के पाये बनेंगे। चित्र में जहाँ-जहाँ काली मोटी लाइनें दिख रही हैं, वहाँ पर कट लगा लो। आकृति-1 से कुर्सी का आधार बनेगा। आकृति-2 से कुर्सी का पीछे वाला हिस्सा यानी टिकने वाला हिस्सा बनेगा। आकृतियाँ कट जाएँ तो फिर बचता है उन्हें जोड़ने का काम।

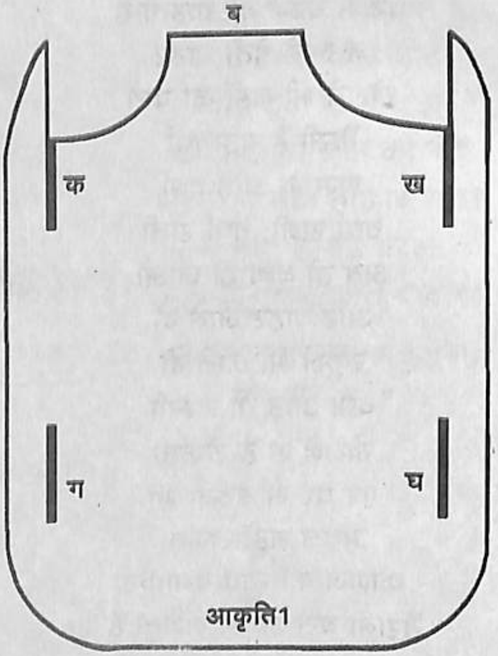

आकृति1

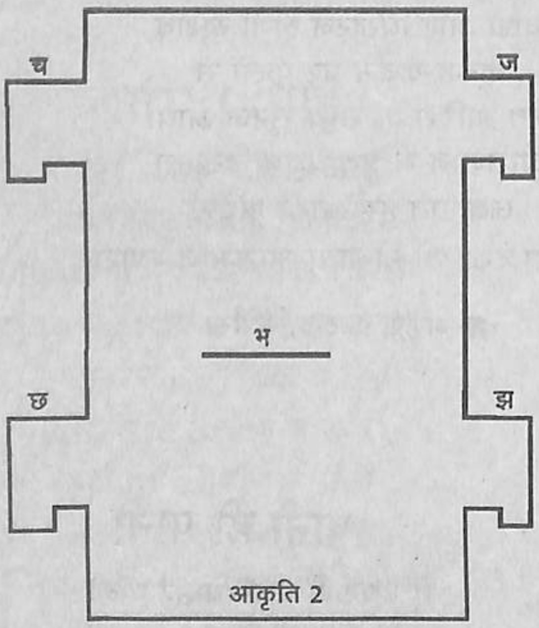

आकृति 2

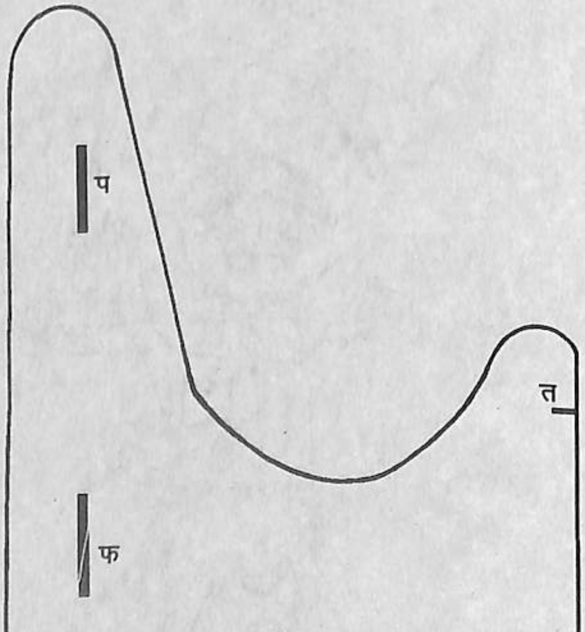

आकृति 3

अब आकृति-3 के **प** में आकृति-2 के **ज** को फँसाओ और **फ** में **झ** को फँसाओ। इसी तरह आकृति-3 जैसी ही जो दूसरी आकृति काटी है उसके **प** और **फ** में आकृति-2 के **च** और **छ** को फँसाओ। फिर ब को भ में डालो। क और ख को दोनों पायों के उभरे हुए हिस्सों में फँसा दो। **ग** और **घ** में आकृति-3 के बचे हुए सिरे त को फँसा दो। हो गई कुर्सी तैयार।

भूकम्प....
और भूकम्प के बाद ....

*मध्यप्रदेश के जबलपुर और इसके आसपास के इलाक़ों में 22 मई, 97 को आए भूकम्प के बारे में तुम सभी ने जुलाई के अंक में पढ़ा ही होगा। भूकम्प के बाद उन इलाक़ों के लोग क्या सोचते हैं, क्या कहते हैं । इस बारे में एकलव्य, होशंगाबाद केन्द्र के माधव केलकर, जो **शैक्षिक पत्रिका संदर्भ** में काम करते हैं, ने उस इलाक़े के लोगों से बातचीत की। भूकम्प प्रभावित इलाक़े के बच्चों से लेकर बड़े तक सभी उस दिन की घटना से अभी भी उबर नहीं पाए हैं। उन्हें सोते जागते एक ही डर रहता है कि पता नहीं फिर कब भूकम्प आ जाए। वे कैसा महसूस करते हैं उनकी ज़ुबानी तुम भी पढ़ो।*

''21 मई को हमारे गाँव में मानस पाठ हुआ था और रात में भंडारा हुआ। रात में लोग अपने-अपने घरों को लौट गए। हम आगे के हादसे को भूल जाना चाहते हैं। लेकिन बार-बार वह हादसा याद आ ही जाता है। उन टूटे घरों में जाते हुए भी डर लगता है और नई झोपड़ियों में भी डर बना रहता है। ''

– कोसमघाट गाँव के भीकम प्रसाद

''उस रात मैं आँगन में बच्चों के साथ सो रही थी कि अचानक धरती हिलने से मेरी नींद खुली। तभी पड़ोस वाले ठाकुर साहब की दीवार मेरे बच्चों के बिस्तर पर गिरने लगी। किसी तरह हमने बच्चों को बचाया और बाहर की ओर भागे। मुझे नहीं मालूम कि भूकम्प क्यों आता है लेकिन भूकम्प के समय धरती पर पैर रखने से तेज़ झुंझुनी होती है, करंट ज़ैसा लगता है और रेलगाड़ी जैसी आवाज़ होती है।''

– कोसमघाट की सुशीला बाई

''हम दोनों दीवार के नीचे दब गई थीं। माँ ने हमें बाहर निकाला।''

– शीला और जयंती सुशीला बाई की बेटियाँ

''भूकम्प में मेरे ऊपर बल्ली गिरी थी।''

– मनीष

''और मेरे ऊपर खपरे।''

– कन्ना

''हमारी नींद खपरों के गिरने से खुली। बाहर आकर देखा तो धूल उड़ रही थी। भूकम्प ने पहले ऊपर-नीचे की ओर हिलाया, फिर दाएँ-बाएँ। ऐसा लगा कि गड़गड़ाहट पश्चिम से पूरब की ओर चल रही थी।''

– नरई गाँव के रज्जू, घनश्याम, शारदा, शिवचरन, ममता, अंगूरी बाई।

''तेज़ आवाज़ और धरती काँपने से हमारी नींद खुली। एक-दो बच्चों पर बर्तन भी गिरे।''

– खमरिया और घाना गाँव के छोटे, विनोद, सुग्रीव, संदीप, पार्वती।

''तेज़ गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनकर पहले तो लगा कि कूलर में कुछ गड़बड़ी आ गई है। बाद में समझ में आया कि यह तो भूकम्प है। हम लोग घरों में ताला लगाकर सड़कों पर आ गए।''

– विनय, जगदीश, कीर्ति, राजेश

''भूगोल की किताबों में पढ़ा तो था भूकम्प के बारे में लेकिन यह कैसा होता है अब जान सका हूँ।''

– मोनू

''पहले तो मुझे लगा कि भूत वगैरह कुछ है। फिर कोई चिल्लाया भूकम्प है तो हम लोग भी बाहर भागे। वैसे मैंने अभी तक न भूत का अहसास किया था न ही भूकम्प का।''

– सोनिया

''भूकम्प भगवान ही लाते है। वही धरती को हिलाते हैं।''

– कोसमघाट के राधे और आरती

'''मुझे ऐसा लगता है कि धरती के भीतर कुछ चीज़ पिघलकर गैस बना रही है। यह गैस बाहर निकलने के लिए रास्ता खोजती हुई यहाँ से वहाँ दबाव बनाती चलती है और जहाँ से रास्ता पा जाती है बड़ी आवाज़ के साथ बाहर निकल जाती है। हमारे कोसमघाट में भी ऐसा ही हुआ है। यहाँ काफ़ी दरारें पड़ी हैं।''

– देवेन्द्र सिंह राजपूत, दसवीं, कोसमघाट

''धरती काफ़ी गरम है, गरमी से गैस बनती है और गैस से भूकम्प आते हैं।''

– अरविंद, सातवीं, कोसमघाट

'' शेषनाग वाली कहानी में सच्चाई नहीं है। विज्ञान जो बता रहा है वही सच है। लेकिन इस विपदा के बाद भी गाँव में मौत न होने से भगवान पर मेरा और भरोसा बढ़ गया है। हमें पुराने टूटे मकान से सामान निकालने में भी डर लग रहा था। मुझे तो आज भी नींद ठीक से नहीं आती।''

– भीकम बर्मन, कोसमघाट

''भूकम्प के बाद मेरे माँ-बाप बात–बात पर डाँटने लगे हैं। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे बाप को मकान टूटने के बाद से टेंशन रहता है इसलिए वह ऐसा करता है। गाँव वाले भी अब गौर नदी के किनारे रहना नहीं चाहते। अब हमें यहाँ डर लगता है। हम लोग चाहते है कि हमें डामर वाली सड़क के किनारे वाली सरकारी ज़मीन पर मकान बनाने दिए जाएँ। वैसे भी हर साल बारिश में गौर का पानी गाँव में घुस आता है।''

– देवेन्द्र , कोसमघाट

''भूकम्प के बाद से मेरी दादी पेड़ के नीचे बैठने में डरने लगी है।''

– कोसमघाट की एक बच्ची

''हमारे बच्चे काफ़ी डरे हुए हैं यहाँ तक कि बर्तन गिरने, ट्रक वगैरह की आवाज़ से भी डर जाते हैं और लिपटकर रोने लगते हैं। अब हम अपने परिवार से ज़्यादा प्यार करने लगे हैं।''

– नरई गाँव की महिलाएँ

''एक दिन तो मरना ही है फिर डर कैसा? हम तो बारिश के बाद यहीं पुरानी जगह मकान बनाना शुरू करेंगे।''

– पम्मीबाई

''हमें तो अब आवाज़ से ही डर लगता है। हमें लगता है कि आवाज़ का मतलब है भूकम्प आने वाला है। अब रात में बुरे-बुरे डरावने सपने भी आते है।''

– खमरिया की शबनम और पार्वती

(जो अपने टूटे मकान के सामने टेंट में रह रही हैं।)

''वैसे तो हम दरारों वाले मकान में रहते है। जब कभी अखबारों में छपता है पूर्णिमा को भूकम्प आएगा तो हम लोग सारी रात बाहर गुज़ारते हैं।''

– दीपक, खमरिया

22 मई को जब सारा शहर निद्रा में मग्न था जिसमें मैं भी शामिल था। भूकम्प धीर-धीरे शुरू हुआ फिर तेज़ और तेज़ होने लगा। मैं अपने परिवार वालों के साथ घर के फ़र्श पर सो रहा था कि अचानक छज्जे पर रखा स्पीकर का बॉक्स मेरे सीने पर आ गिरा। उसके बाद कैसेट टप-टपकर गिरने लगी। तुरन्त मेरी आँखें खुली। मैं समझा बिल्ली छज्जे पर चढ़कर भगदड़ मचा रही है। बहुत ज़ोरों से आवाज़ आ रही थी। जैसे बम बरस रहे हों, बल्ब की रोशनी में मैंने देखा मेरे घर के लोग उठने के बावजूद 5-6 इंच तक उछल रहे थे। मैंने खड़े होने की कोशिश की परन्तु असफल रहा। किसी तरह हम लोग बाहर की ओर भागे बाहर पूर्णिमा की रोशनी में छत की मुंडेर काँपती हुई दिख रही थी।

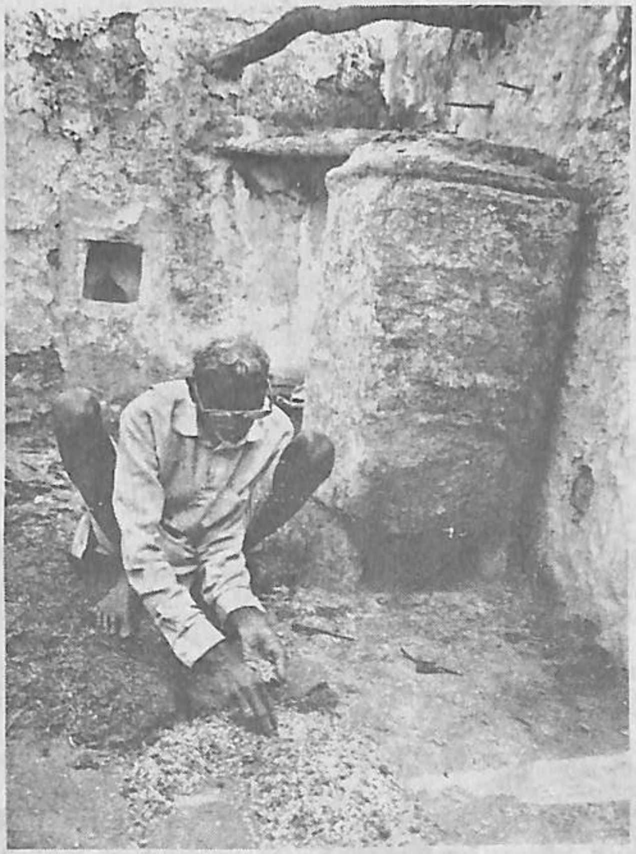

दोनों फोटो : रजनीकान्त यादव

बाद में अन्य लोगों से बातचीत और अपने अनुभव के आधार पर मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि भूकम्प ने पहले मकानों को ऊपर-नीचे हिलाया फिर आड़ा-तिरछा। जिससे मकान टूटे ऐसा मेरा मानना है।

– निशांत यादव, दसवीं, जबलपुर

नींद

मीठी-मीठी प्यारी नींद
लगती राजदुलारी नींद

कोई जल्दी उठ जाता है
किसी की होती भारी नींद

सपने लाती तरह-तरह के
हँसमुख फूलकुमारी नींद

गामा जैसे पहलवानों से
बाजी कभी न हारी नींद

बड़े-बड़े शूरमाओं को
देती मात करारी नींद

हाथी, हिरण, शेर के ऊपर
बेख़ौफ करे सवारी नींद

हर किसी को सुख देती है
है केसर की क्यारी नींद

इससे बड़ा न और नशा है
सब से बड़ी खुमारी नींद

बिना पंख के उड़ती फिरती
घूमती दुनिया सारी नींद

❑ अतुल गोस्वामी

चित्र ❑ शोभा घारे

वर्ग पहेली – 75

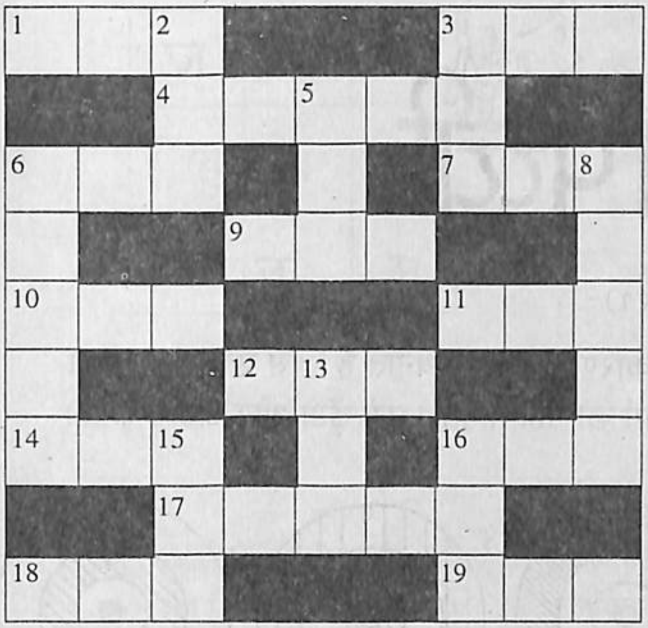

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. मुख्य (3)
3. मानव ललाट में नया है (3)
4. एक ही तरह की चीज़ों का मिलान करना और उनकी व्यवस्था समझना (5)
6. तापस हारा तो उसे चाहिए मदद भी और आश्रय भी (3)
7. खिड़की (3)
8. 10,00,00,00,000 = दस .... (3)
10. बिल्कुल छोटे बच्चों को पहनाई जाने वाली पोशाक (3)
11. मान्यवर दीमक में ख़ास किस्म का पहनावा (3)
12. मध्यप्रदेश का वह शहर जो अपने इस्पात कारखाने के लिए मशहूर है (3)
14. बचाने वाला (2)
16. जो साँप, भालू, बंदर आदि का खेल दिखाए (3)
17. रेल की पटरियाँ .... होती हैं (5)
18. समकक्ष की कटौती और उलटफेर में योग्य या सामर्थ्यवान (3)
19. शक्ति(3)

संकेत : ऊपर से नीचे

2. थोड़ी-सी खसखस, थोड़ी-सी राई; मिलकर बनाए एक ख़तरनाक बीमारी (3)
3. तुम्हारे पिताजी की बहन तुम्हारी माँ की क्या लगीं ? (3)
5. भक्तिकाल के एक संत कवि जो पेशे से जुलाहे थे (3)
6. जिसमें सूझ–बूझ हो (5)
8. बाड़ा या प्राचीर (5)
13. बोझ या भार रखना (3)
15. कम और सम के मेल से बने वह जो खाने की चीज़ तो नहीं, फिर भी खाई जाती है (3)
16. .... क्या न करता, एक कहावत है (3)

इस पहेली का मूल रूप हमें लक्ष्मण सिंह क्षत्री ने पेण्ड्रा रोड, बिलासपुर से भेजा था।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का वह अंक उपहार में भेजा जाएगा जिसमें इस पहेली का हल छपेगा। वर्ग पहेली – 75 का हल दिसम्बर , 1997 के अंक में देखें।

वर्ग पहेली 72 का हल

वर्ग पहेली - 72 के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं - इस्माइल राही, जावद, मन्दसौर; आशुतोष अंगारे, बंगला मटिया व लालसिंह धनकर, रजोली, दोनों दुर्ग; **सभी म. प्र.**। इन्हें चकमक का सितम्बर का अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

श	ल	ज	म		म	स	ल	न
री		हा		स		ब		र्म
फा	गु	न		ब	त	ला		दा
	वा		ड	ब	री		टी	
नी	हा	रि	का		श	क	टा	र
	टी		र	वा	ना		ग	
ग्रा		ज	ना	ब		कु	ढ़	ना
ह		ठ		स्ता		लाँ		दा
क	त	र	न		अ	चे	त	न

माथापच्ची

(1)

नीचे बने गोले अपने एक ख़ास गुणधर्म के कारण एक समूह बनाते हैं। बस एक गोला ऐसा कहीं से बीच में टपक पड़ा है जो उस गुणधर्म को नहीं मानता। उसे ढूँढो और अलग करो।

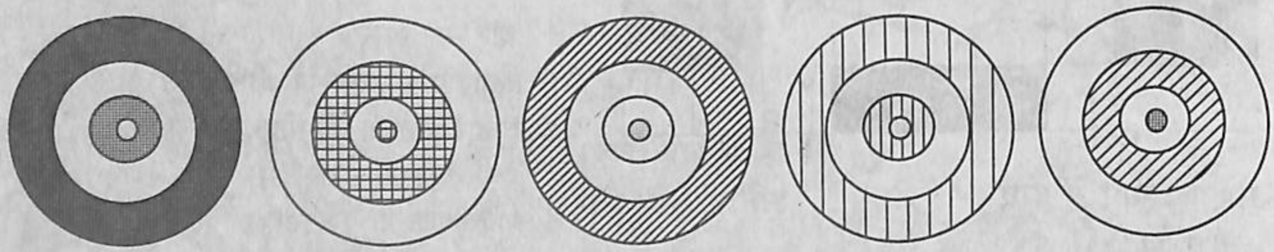

(2)

इस बार मुनिया की सालगिरह पर उसकी बुआ ढेर सारे लड्डू बनाकर लाई थी। मुनिया बचपन से ही अपनी बुआ जैसी बनना चाहती है। चाहती है कि जल्दी-से बड़ी हो जाए। इस बार बुआ से मिलने पर मुनिया ने कहा, ''अब तो मैं खूब बड़ी हो गई। है न, बुआ! अब मैं तुमसे कितनी छोटी हूँ? ''

बुआ ने कहा, ''अभी तो मेरी उम्र तुम्हारी उम्र से चार गुनी अधिक है।''

''तो क्या मैं कभी भी तुम्हारे बराबर नहीं हो पाऊँगी?'' मुनिया ने मायूसी से पूछा ।

''नहीं। लेकिन अब से छह साल बाद तुम इतनी बड़ी ज़रूर हो जाओगी कि मेरी उम्र तब तुम्हारी उम्र से सिर्फ़ तीन गुनी ही अधिक होगी।'' यह तो थी बुआ-भतीजी की गपशप। तुम पता लगाओ कि इन दोनों की उम्र क्या-क्या हैं?

(3)

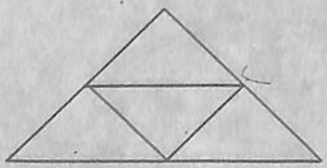

इस त्रिभुज को रंग करना है। हमारे पास सिर्फ़ चार ही रंग हैं। अब यह बताओ कि अगर चारों छोटे त्रिभुजों में अलग–अलग रंग भरे जाएँ तो यह काम कितने तरीक़े से किया जा सकता है ताकि बड़ा त्रिभुज हर बार कुछ अलग दिखे?

अगस्त अंक की पहेलियों के उत्तर

1. ढोलक, 2. नाव, 3. ताला, 4. सिलबट्टा, 5. मच्छर, 6. आकाश में सूर्य और चाँद।

(5)

म

ज	अ,ा	क
ि, इ	त	श
य	ऊ, ू	म

इस पहेली में तुम्हें ढेर सारे शब्द बनाने हैं। शब्द बनाने के लिए तुम इस जाली में लिखे अक्षरों का उपयोग कर सकते हो। चाहो तो एक शब्द में किसी भी एक मात्रा (अक्षर नहीं) का उपयोग एक से ज़्यादा बार कर सकते हो। और हाँ, जाली के बाहर वाला अक्षर हर शब्द में एक बार ज़रूर आना चाहिए।

तो हो जाओ शुरू। जैसे – म + ा + म + ा = मामा!

(6)

कल ज्यामिति की टीचर ने एक मज़ेदार सवाल हल करने को दिया था। जब घर आकर हमने हल करने की कोशिश की तो पसीने छूटने लगे। सवाल यह है कि इस आकृति में से चार रेखाएँ हटानी हैं ताकि आकृति में पाँच त्रिभुज ही बचें। तुम भी कुछ मदद करो।

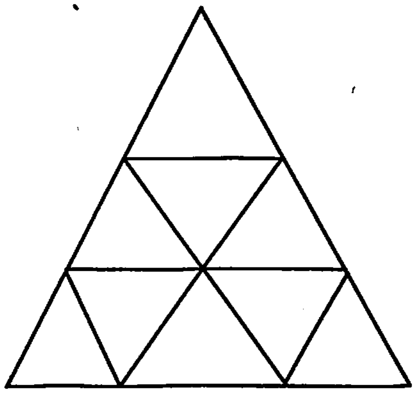

(7)

पहले नौ अंकों (यानी 1 से 9) को एक चौकोर के रूप में जमाओ। हर आड़ी या खड़ी भुजा में तीन-तीन अंक आएँगे। पर इन्हें जमाना ऐसे है कि हर भुजा या कर्ण के अंकों को जोड़ने पर जवाब एक समान ही आए।

(8)

बाईं ओर दिए वृत (गोले) में से एक टुकड़ा गायब है। वह टुकड़ा दाईं ओर के उसी आकार के दूसरे टुकड़ों की भीड़ में छुप गया है। क्या तुम वृत को अच्छे से देख-समझकर सोचकर बता सकते हो कि वह कौन-सा टुकड़ा है?

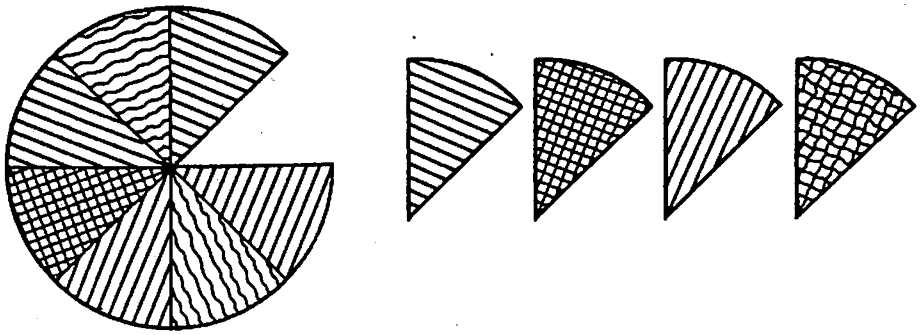

क़िस्सा-बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा। जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा - बुरातीनो।

अपनी शरारतों के कारण बुरातीनो बिल्ले और लोमड़ी के चंगुल में फँस गया। फिर पुलिस के कुत्ते बुरातीनो को नगर के बाहर गन्दे तालाब में फेंक आए। तालाब के कूबर कछुए ने उसे बचाया और उसे सोने की चाबी दी। सोने की यह चाबी कारावास बारावास भी पाना चाहता था। इसी चक्कर में बुरातीनो और कारावास बारावास के बीच घमासान लड़ाई हुई। इस लड़ाई में कारावास बारावास बुरी तरह घायल हो गया।

बुरातीनो अपने साथियों के साथ एक गुफा में जाकर आराम करने लगा। थोड़ी देर बाद वहाँ से कारावास बारावास और जोंकमार गुज़रे और एक होटल में जाकर बैठ गए। उधर बुरातीनो भी होटल में पहुँच गया। अब आगे पढ़ो ....

कारावास को फिर मिला बुरातीनो

कारावास बारावास और जोंकमार खाने-पीने में जुटे हुए थे। ढाबा मालिक उनके गिलासों में शराब उड़ेल रहा था।

कारावास बारावास हड्डी चिचोड़ते हुए ढाबा मालिक से कह रहा था, "यह शराब बिल्कुल बेक़ार है, चलो, उस घड़े से डालो!" और उसने उस घड़े की ओर इशारा किया जिसमें बुरातीनो छिपकर बैठा हुआ था।

"सिनियोर, यह घड़ा तो ख़ाली है," ढाबा मालिक ने कहा।

"झूठ बोलता है, दिखा तो ज़रा।"

तब ढाबा मालिक ने घड़ा उठाकर उलट दिया। बुरातीनो ने पूरा ज़ोर लगाकर हाथ-पैर घड़े की दीवारों से अड़ा लिए, ताकि लुढ़ककर गिरे नहीं।

"उसमें कुछ काला-काला दिख रहा है," कारावास बारावास ने घरघराती हुई आवाज़ में कहा।

"उसमें कुछ सफ़ेद-सफ़ेद दिख रहा है," जोंकमार ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा।

"महाशयों, मेरी जीभ में कीड़े पड़ जाएँ, मेरी कमर टूट जाए, यह घड़ा बिल्कुल ख़ाली है!"

"अच्छा, तब उसे मेज़ पर रख दो, हम उसमें हड्डियाँ फेकेंगे।"

घड़े को कठपुतली थियेटर के मालिक और जोंकमार के बीच में रख दिया गया। बुरातीनो के सिर पर चिचोड़ी हुई हड्डियाँ तड़ातड़ बरसने लगीं।

कारावास बारावास ने नशे में धुत्त होकर अपनी दाढ़ी अलाव के सामने फैला दी, ताकि उसमें चिपकी हुई राल पिघलकर बह जाए।

"बुरातीनो को एक हथेली पर रखूँगा," उसने शेखी बघारते हुए कहा, "और दूसरी हथेली से मच्छर की तरह उसे मसल दूँगा, चटनी बना दूँगा।"

"इस बदमाश के साथ यही करना चाहिए," जोंकमार ने हाँ में हाँ मिलाई, "लेकिन पहले उसकी देह में जोंकें लगा देनी चाहिए, ताकि वे उसका सारा ख़ून चूस लें....!"

"नहीं!" कारावास बारावास ने मेज़ पर मुक्का मारते हुए कहा, "पहले मैं उससे सोने की चाबी छीन लूँगा.."

बातचीत में ढाबा मालिक भी पीछे न रहा, अब तक वह कठपुतलों के भागने की ख़बर सुन चुका था।

"सिनियोर, आप लोगों को उसकी तलाश में भटकने की ज़रूरत नहीं। आप यहीं आराम से शराब पिएँ, मैं अपने दो चुस्त वफ़ादारों को भेजता हूँ, वे देखते-देखते सारा जंगल छान मारेंगे और बुरातीनो को उठाकर यहाँ ले आएँगे।"

"ठीक है, भेज दो उन्हें," काराबास बाराबास ने अपने जूते के मोटे तले सुखाने के लिए उन्हें आग की तरफ बढ़ाते हुए कहा। वह नशे में चूर हो चुका था, सो गला फाड़-फाड़कर गाने लगाः

"मेरे लोग अजब हैं,
मूर्ख और कठमग़ज़ हैं।
कठपुतलियों का मालिक हूँ मैं,
अब जानो तुम कौन हूँ मैं......
खौफ़नाक काराबास,
तानाशाह बाराबास.......
पुतले मुझसे डरते हैं,
मेरे सामने झुकते हैं।
चाहे तू नन्ही-मुन्नी पुतली है,
मेरे हाथों की ही कठपुतली है।
चाहे तू बदमाश घोड़ा है,
हाथों में मेरे कोड़ा है।
कोड़ा मेरा सातमुँहा,
कोड़ा मेरा सातमुँहा।
दिखलाऊँगा कोड़े की मार,
डाँट और छोटी-सी फटकार-
पुतले सब गाएँगे,
पैसे सब बरसाएँगे
झोली में मेरी झमझम,
झोली में मेरी झमझम......"

तभी बुरातीनो घड़े के भीतर से गूँजती आवाज़ में बोलने लगा, "भेद खोल, अभागे, भेद खोल!"

एकाएक इस आवाज़ से काराबास बाराबास के होश उड़ गए, वह जोंकमार की ओर आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगा।

"यह तुम बोल रहे थे?"

"नहीं तो..!"

"तो फिर किसने भेद खोलने को कहा?"

जोंकमार अन्धविश्वासी आदमी था, इसके अलावा वह भी नशे में धुत्त था। डर के मारे उसका चेहरा स्याह पड़कर मुरझा गया।

उसे देखकर काराबास बारबास के भी रोंगटे खड़े हो गए।

"भेद खोल," घड़े के अन्दर से फिर वही आवाज़ गूँजने लगी, "भेद बता, नहीं तो इस जगह से ज़िन्दा नहीं उठेगा!"

काराबास बाराबास ने उछलकर खड़े होने की कोशिश की, लेकिन वह उठ नहीं सका।

"क-क-कौन सा भ-भ-भेद?" उसने हकलाते हुए पूछा।

आवाज़ ने जवाब दिया, "बूढ़े कछुए वाला भेद!"

डर के मारे जोंकमार मेज़ के नीचे खिसक गया। काराबास बाराबास का मुँह खुला का खुला रह गया।

"दरवाज़ा कहाँ है, दरवाज़ा कहाँ है?" आवाज़ फिर से रहस्यमय आकाशवाणी की तरह गूँजने लगी,....."अभी बतलाता हूँ, अभी बतलाता हूँ, चुप हो जाओ!" काराबास बाराबास फुसफुसाया। "दरवाज़ा बूढ़े कार्लो के कमरे में, अलावघर की तस्वीर के पीछे है,...." उसने इतनी बात कही ही थी कि ढाबा मालिक आ धमका।

"ये हैं हमारे विश्वसनीय मददगार! इन्हें पैसे दें, तो ये शैतान को भी पकड़कर हाज़िर कर देंगे, सिनियोर...!" और उसने दहलीज़ पर खड़ी लोमड़ी अलीसा और बिल्ले बज़ीलियो की ओर इशारा किया। लोमड़ी ने अपना पुराना हैट उतारते हुए अभिवादन किया।

"सिनियोर काराबास बाराबास, हम ग़रीबों को सोने के दस सिक्के दान कर दें और हम बदमाश बुरातीनो को यहीं, इसी क्षण हाज़िर किए देते हैं।"

काराबास बाराबास ने दाढ़ी के नीचे जेब में हाथ डाला और सोने के दस सिक्के निकालकर दे दिए, "ये रहे पैसे, बुरातीनो कहाँ है?"

लोमड़ी ने कई बार सिक्के गिने फिर ठण्डी आह भरकर आधे सिक्के बिल्ले को दे दिए और पंजे से इशारा किया, "वह इस घड़े में छिपा है, सिनियोर, ठीक आपके सामने!"

काराबास बाराबास ने मेज़ पर से घड़ा उठाया और उसे ग़ुस्से में फ़र्श पर पटक दिया। घड़े के टुकड़ों और चिचोड़ी हुई हड्डियों के ढेर से बुरातीनो उछलकर खड़ा हो गया। सभी भौचक थे, इसी बीच वह तीर की तरह ढाबे से बाहर निकल भागा - सीधा मुर्गे की ओर, जो बड़े गर्व के साथ मरे हुए केंचुए का, कभी एक आँख से, तो कभी दूसरी आँख से निरीक्षण कर रहा था।

"यह तूने मेरे साथ ग़द्दारी की है, खूसट बूढ़े!" बुरातीनो ने गुस्से में नाक तरेरते हुए कहा।" "चल, अब सिर पर पाँव रखकर भाग ले यहाँ से..!"

और उसने सेनापति की रंग-बिरंगी दुम कसकर पकड़ ली। मुर्गा कुछ समझा-बूझा तो नहीं, लेकिन उसने अपने पंख फैला दिए और अपनी ऊँची-ऊँची टाँगों से दौड़ पड़ा। बुरातीनो जैसे बवंडर में फँस गया हो, उसके पीछे-पीछे ढलान पर उतरा, रास्ते के पार पहुँचा, फिर मैदान से गुज़रता हुआ जंगल की ओर छलाँगें लगाता चला गया।

काराबास बाराबास, जोंकमार और ढाबा मालिक को आख़िर होश आया और वे बुरातीनो का पीछा करने के लिए दौड़ पड़े। लेकिन आसपास बहुत खोज-बीन करने पर भी बुरातीनो उन्हें नहीं दिखा, सिर्फ़ दूर मैदान में अकेला मुर्गा भागता जा रहा था। लेकिन सबको पता था कि वह सनकी मुर्गा है, किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

(अगले अंक में जारी)

('सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार।
लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय।
सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोश्किन)

मोनिका नेताम, पेण्ड्रा, बिलासपुर, म.प्र.

सुगंधा, चेन्नई, तमिलनाडु

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/97

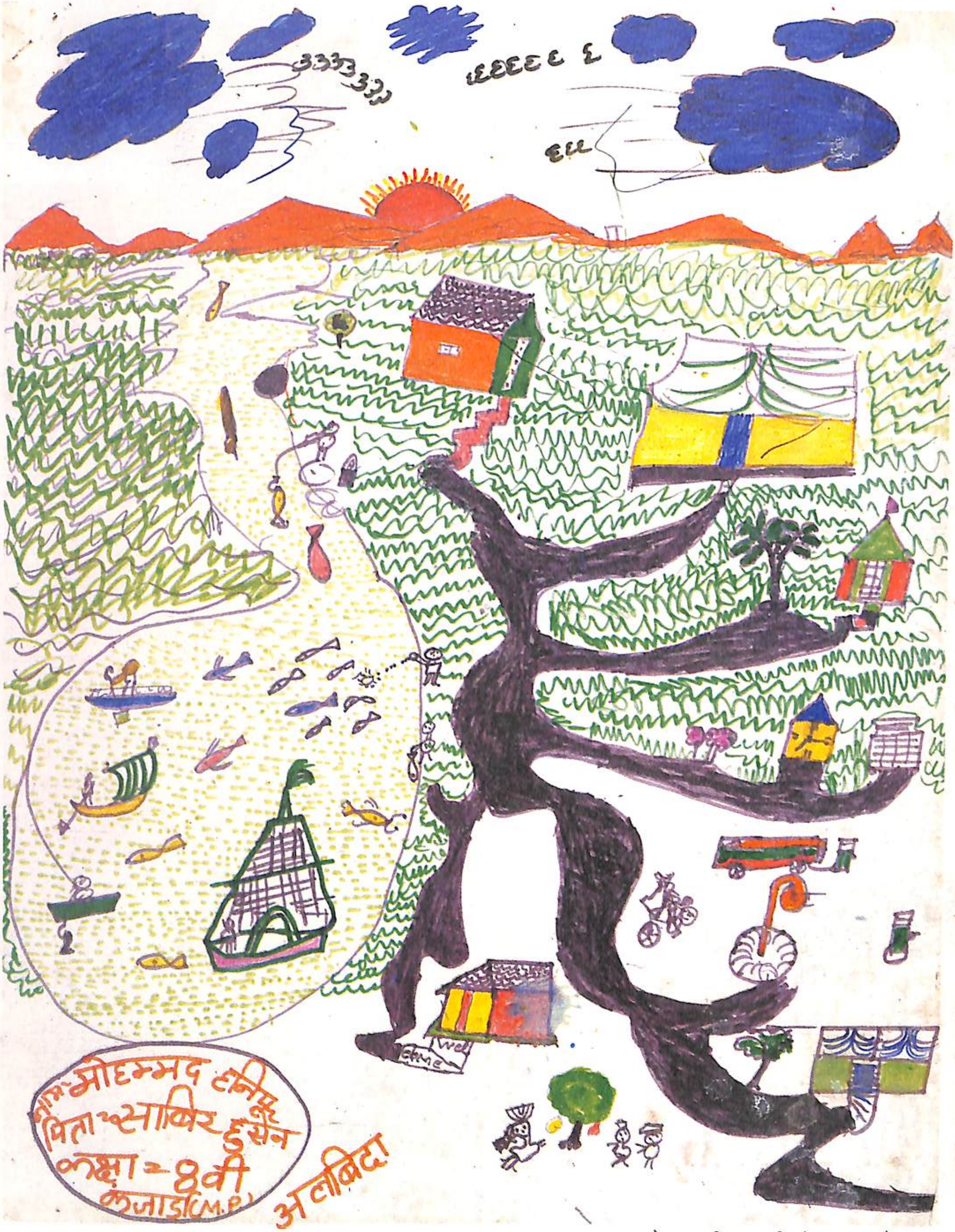

मोहम्मद हनीफ, आठवीं, कंजाड़ा, मन्दसौर, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना